



सत्य एक डेबिट कार्ड है- पहले कीमत चुकाएं और बाद में आनंद लें। झूठ एक क्रेडिट कार्ड है- पहले आनंद लें और बाद में कीमत चुकाएं।

-ब्रह्माकुमारी शिवानी

जिद...सच की

● वर्ष: 12 ● अंक 253 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार 22 अक्टूबर, 2026

शीतल देवी और तोमन कुमार ने जीता... 7 पंजाब में सियासी व चुनावी राग... 3 बीजेपी बिना किसी हेराफेरी के... 2

# ट्रेड डील के बीच राहुल गांधी के बिग पंच ने बिगाड़ दिया मोदी का खेल

## रुबियो का भारत दौरा, एपस्टीन फाइल्स और राहुल के सवाल

» तस्वीर में कैद राज ने बढ़ाई राजनीतिक बेचैनी राहुल गांधी की राजनीतिक भविष्याणी की तरफ बढ़ती कहानी

» रुबियो की भारत यात्रा के बीच उठे सवालों ने दिल्ली की सियासत में मचाई हलचल तस्वीर पर घिरी सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

### सरकार के सामने मुश्किल ही मुश्किल

यह सवाल किसी सड़क किनारे की राय की दुकान पर उठी अफवाह नहीं है। इसे देश के विपक्ष के नेता ने उठाया है। सवाल की भाषा राजनीतिक है उसका अंदाज आक्रामक है और उसका निशाना सीधे भाजपा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं की तरफ है। राहुल गांधी ने तस्वीर और रुबियो की यात्रा को जोड़ते हुए पूछा कि अमेरिका किसे ब्लैकमेल कर रहा है। राहुल गांधी के सवाल के बाद असली चुनौती इसका जवाब क्या होगा है। राहुल के बयान को केवल राजनीतिक शोर बतकर खारिज करना आसान है। मुश्किल यह है कि तस्वीर से उठे सवालों का जवाब दिया जाए मुलाकातों का संदर्भ स्पष्ट किया जाए और देश को बताया जाए कि आखिर पूरा मामला है क्या।



### राहुल ने ऐसा कौन-सा दरवाजा खटखटाया कि सत्ता असहज हो गई?

राहुल गांधी की राजनीति पर सवाल उठाए उनके आरोपों को चुनौती दी जाए उनके हर बयान का जवाब दी जाए लेकिन इस बार उनके सवाल की धार को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उन्होंने केवल यह नहीं पूछा कि हर्दीप सिंह पुरी एपस्टीन से क्यों मिले। उन्होंने तस्वीर के सामने आने और रुबियो की भारत यात्रा के समय को जोड़कर एक बड़ा राजनीतिक सवाल खड़ा किया। यानी बहस अब केवल एक मंत्री के पुराने संपर्कों की नहीं है बल्कि

अंतरराष्ट्रीय रिश्तों, राष्ट्रीय हितों और सत्ता की जवाबदेही की भी है। राहुल का सवाल सरकार के लिए असहज हो सकता है। मगर लोकतंत्र में विपक्ष का काम ही सत्ता को असहज करना है जब तक वह सवाल तथ्यों और सार्वजनिक हित की जमीन पर खड़े हो। इसलिए राहुल के सवाल का जवाब राहुल पर हमला करके नहीं दिया जा सकता। जवाब देना है तो तस्वीर के संदर्भ पर दी जाए। मुलाकातों के बारे में दी जाए। दस्तावेजों में दर्ज संवाद की प्रकृति पर दी जाए। और अगर राहुल गांधी ने ब्लैकमेलिंग का सवाल उठाया है तो सरकार यह स्पष्ट करे कि क्या उसके पास इस आरोप का समर्थन करने वाला कोई प्रमाण है। अगर नहीं है तो यह बात भी साफ-साफ कही जाए। सवाल पूछने वाले को कटघरे में खड़ा करना आसान है। सवाल का जवाब देना असली परीक्षा होती है।

### तीन-चार मुलाकातें या कहानी का अधूरा पन्ना?

हर्दीप सिंह पुरी ने फरवरी 2026 में कहा था कि एपस्टीन से उनकी मुलाकातें पेशेवर संदर्भ में हुई थी। उनके मुताबिक इंटरनेशनल पीस इंस्टीट्यूट और उससे जुड़ी गतिविधियों के

दौरान उनकी एपस्टीन से तीन या अधिकतम चार बार मुलाकातें हुई थी। पुरी ने एपस्टीन के अपराधों से किसी तरह के संबंध से इनकार किया था। सरकार के मंत्री का पक्ष दर्ज लेना चाहिए। किसी व्यक्ति के किसी अपराधों से मिलने भर से उसे अपराध में

शामिल नहीं ठहराया जा सकता। मगर अब तस्वीर ने उनके पुराने स्पर्दीकरण पर नए सवाल खड़े कर दिए हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक सामने आई तस्वीर में पुरी और एपस्टीन मेज के आगे-आगे बैठे दिखाई देते हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि

दस्तावेजों के संवाद में इसी बैठक की कई मिलती जुलती तस्वीरें हैं। पुरी के कार्यालय ने कहा कि मंत्री को लगभग एक दशक पुरानी तस्वीर में दिखाई गई विशेष बैठक याद नहीं है और उन्होंने यह दावा नहीं किया था कि वह एपस्टीन से कभी अकेले नहीं मिले।

### ट्रेड डील अंतिम चरण में और ब्लैकमेलिंग के आरोप

अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो भारत आए हैं। भारत और अमेरिका व्यापार समझौते को आगे बढ़ाने की कोशिश में हैं। ऊर्जा, तकनीक, रक्षा और रणनीतिक सहयोग जैसे मुद्दों दोनों देशों के रिश्तों के केंद्र में हैं। एसोसिएटेड प्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, रुबियो और विदेश मंत्री एस. जयशंकर के बीच मुंबई में बातचीत हुई और दोनों पक्ष व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने की दिशा में आगे बढ़ना चाहते हैं। यानी एक तरफ कुटनीति की मेज पर बातचीत है दूसरी तरफ दिल्ली में तस्वीर को लेकर राजनीतिक घमासान मचा है। राहुल गांधी ने दोनों घटनाक्रमों के समय को जोड़कर सवाल उठाया। यही वह बिंदु है जिसने इस विवाद को एक बड़े राजनीतिक नैरेटिव में बदल दिया है।

### पवन खेड़ा का दावा

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने दावा किया है कि 2014 से 2017 के बीच पुरी और एपस्टीन के बीच कम से कम 62 ईमेल का आदान प्रदान हुआ और दस्तावेजों में 14 बैठकों का उल्लेख मिलता है। गौरवलाब है कि जेफ्री एपस्टीन कोई सामान्य कारोबारी नहीं था। वह एक अमेरिकी फाइनेंसर था जिसे नाबालिगों

से जुड़े यौन अपराध में दोषी ठहराया गया था और 2019 में हिरासत में उसकी मौत हो गई। उसके संपर्कों में राजनीति कारोबार और दूसरे प्रभावशाली क्षेत्रों से जुड़े बहुत से लोग शामिल थे। इसी कारण उसके ईमेल, तस्वीरों

और अन्य दस्तावेजों को लेकर दुनिया भर में सवाल उठते रहे हैं। हर्दीप सिंह पुरी का नाम भी उन लोगों की लिस्ट में जिनकी करीबियां एपस्टीन से थीं। अब पवन खेड़ा के सवाल और राहुल के चार के बाद देश को यह जानने का अधिकार है कि सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण पदों पर बैठे लोगों के संपर्कों का वास्तविक संदर्भ क्या था। और उन संपर्कों को लेकर जब विरोधभास का दावा किया जाए तो स्पाईकरण कितना स्पष्ट है।



# बीजेपी बिना किसी हेराफेरी के कोई भी चुनाव नहीं जीत सकती : अखिलेश

» सपा प्रमुख का योगी व मोदी सरकार पर करारा वार

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने फिर भाजपा पर करारा वार किया है। उन्होंने कहा कि बीजेपी बिना किसी हेराफेरी और धांधली किए कोई भी चुनाव नहीं जीत सकती है। शिक्षक-स्नातक निर्वाचन में शिक्षा विभाग के अधिकारियों को डराने-धमकाने और बेईमानी करने के काम दिए जा रहे हैं। डीआईओएस और बीएसए फोन से शिक्षकों को धमका रहे हैं।

पर्याप्त प्रमाण होने पर यही उनको जेल भेजने का पर्याप्त आधार बनेगा। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग रखवाली करे कि हेराफेरी न हो, चुनाव निष्पक्ष रहे। अधिकारी अधिकारी रहे, पोलिटिकल वर्कर न बने, नहीं तो जेल जाएंगे। सरकार में बदलाव हुआ तो शिक्षा विभाग में जो लूट मची है उसमें लिस लोगों का जेल जाना तय है।



जनता इस बार मुख्यमंत्री की कुर्सी छीनने जा रही है

जनता इस बार मुख्यमंत्री की कुर्सी छीनने जा रही है। वे कुर्सी बचाने के लिए कुछ भी कह सकते हैं। उन्होंने कहा कि बीजेपी सरकार ने आजम खान साहब के साथ बड़े पैमाने पर अन्याय किया है। उनका न्याय दिलाने के लिए समाजवादी पार्टी लगातार काम करती रहेगी। शिक्षा विभाग की अधी-अधुरी योजना भी बीजेपी ने शुरू की थी, हम उन्हें पुरा शिक्षक बनाकर सरकारी नौकरी देने का काम करेंगे।

वोटर लिस्ट बीजेपी के मंत्रियों के पास है

अखिलेश यादव ने कहा कि वोटर लिस्ट किसी के पास नहीं है परन्तु बीजेपी के मंत्रियों के पास है, उनके नेताओं के पास है। उन्हें कैसे मिल गई? किसी कम्पनी को खरार किया होगा। तभी मंत्री के वायस से कॉलिंग हो रही है। यह बिना डेटा हसिल किए नहीं हो सकता है। हमारे कार्यकर्ता सावधान और सतर्क रहें। बीजेपी का काम धांधली करने का है। हमारे पास अयोध्या, फैजाबाद के चुनावों की रिकॉर्डिंग है। वायस कॉलिंग को भी रिकॉर्ड कर लें।

अखिलेश यादव का दिखा अलग अंदाज काफिला रोककर काकोरी में खाया समोसा

यूपी विधानसभा चुनाव 2027 से पहले अखिलेश यादव का अलग अंदाज देखने को मिला है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव लखनऊ के मलिनबाद विधानसभा क्षेत्र से 2022 में प्रत्याशी रहे सोनू कुमारीया के पिता की श्रद्धांजलि समारोह में पहुंचे थे। इस दौरान वापसी करते समय अखिलेश यादव काकोरी की एक समोसे की दुकान पर रुके जहां उन्होंने समोसा खाया। इसके बाद कुछ दूर आगे बढ़ने पर एक बाइक राइडर से भी अखिलेश यादव ने मुलाकात की। अखिलेश ने जगह-जगह अपना काफिला रुक करके कार्यकर्ता और आम जनता से मुलाकात की।

बेरोजगारी और महंगाई बढ़ाने वाले देश के सबसे बड़े दुश्मन

अखिलेश यादव ने कहा कि सच्चाई तो यह है कि बेरोजगारी और महंगाई बढ़ाने वाले देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं। इन्होंने बैंक ड्रॉ दिए। किसान की आय दुगुनी नहीं हुई, उसे गरीब बनाया, ये जो एलडीए विभाग है, ये कर्षण का विभाग है। ये पैसा इकट्ठा करता है। इसे बीजेपी के लोगों ने ग्राह्यार का अड्डा बना दिया है। सरकार अपने को गिरने से बचा रही है। विकास रुबे की गाड़ी नहीं पलटी, सरकार बचाई गई। बीजेपीई सिर्फ अपनी सरकार बचाने में श्रद्धा रखते हैं। जांच में कई अधिकारियों और लोगों के नाम आ सकते हैं।

## अपनी पब्लिक ही कर रही विरोध प्रदर्शन : हामिद अंसारी

» पूर्व उपराष्ट्रपति बोले- अपना देश ऐसे ही चलता है

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और मोदी सरकार के तख्तापलट के इरादे से देश के कुछ हिस्सों में चल रहे विरोध-प्रदर्शनों पर पहली बार अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा है कि अपना देश ऐसे ही चलता है।

दिल्ली में परेड ग्राउंड में धार्मिक रामलीला कमेटी की ओर से आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने के लिए वे पहुंचे हुए थे। पूर्व उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी बुधवार को दिल्ली में धार्मिक रामलीला कमेटी की ओर से आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने देशभर में चल रहे विरोध-प्रदर्शनों को लेकर पूछे गए सवाल पर अपनी राय दी और कहा कि अपना देश ऐसे ही चलता रहा है। जब उनसे इसपर कुछ खुलकर बोलने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा कि प्रदर्शन करने वाली देश की जनता है और वह कहीं बाहर से तो आई नहीं है, इसलिए उसे धरना-प्रदर्शन का अधिकार है।



शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने देशभर में चल रहे विरोध-प्रदर्शनों को लेकर पूछे गए सवाल पर अपनी राय दी और कहा कि अपना देश ऐसे ही चलता रहा है। जब उनसे इसपर कुछ खुलकर बोलने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा कि प्रदर्शन करने वाली देश की जनता है और वह कहीं बाहर से तो आई नहीं है, इसलिए उसे धरना-प्रदर्शन का अधिकार है।

## चुनावी दिखावे के लिए आजम से मिल रहे अखिलेश : राजभर

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव के आजम खान से जेल में मुलाकात करने को लेकर निशाना साधा है। राजभर ने आरोप लगाया कि अखिलेश यादव की इस मुलाकात का मकसद चुनावी दिखावा करना और आजम खान के जरिए मुस्लिम वोट हासिल करना है।

उन्होंने कहा कि मुस्लिम समुदाय अब अखिलेश यादव से मुस्लिम मुख्यमंत्री घोषित करने की मांग कर रहा है और ऐसा होने पर ही उन्हें मुस्लिम समुदाय के वोट मिलेंगे। राजभर ने यह भी आरोप लगाया कि आजम खान को जेल भिजवाने के पीछे अखिलेश यादव की भूमिका थी। अखिलेश यादव आजम खान से मुलाकात करेंगे इस मुलाकात के लिए करीब 45 मिनट का समय निर्धारित है।

## मैं कोई ट्रैवल एजेंट नहीं हूं: थरूर

» राहुल गांधी के दौरे पर बोले कांग्रेस नेता

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा कि वह कोई ट्रैवल एजेंट नहीं हैं। उनसे यह सवाल पूछा गया था कि नई दिल्ली में सीईसी ज्ञानेश कुमार और मतदाता सूची के SIR को लेकर हो रहे विरोध-प्रदर्शनों के बीच, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी विदेश यात्रा पर क्यों गए हैं। थरूर की यह टिप्पणी तब आई, जब बीजेपी ने राहुल गांधी की विदेश यात्रा को लेकर उनकी आलोचना की।

बीजेपी ने राहुल पर आरोप लगाया है कि दिल्ली में विरोध-प्रदर्शनों के दौरान झूठ बोल-बोलकर थक जाने के बाद वे छुट्टी पर चले गए हैं। थरूर केरल में थे, जब पत्रकारों ने उनसे पूछा कि गांधी विदेश क्यों गए। इस पर कोई भी टिप्पणी करने से इनकार करते हुए थरूर ने कहा, मैं कोई ट्रैवल एजेंट नहीं हूँ। मुझे यह सवाल पूछने का कोई मतलब नहीं है। मैं



दिल्ली छोड़कर अभी यहाँ क्यों आया? हर इंसान की कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं। इसलिए, मैं इस पर कोई टिप्पणी नहीं कर सकता। राहुल गांधी चल रहे विरोध-प्रदर्शनों के बीच चार दिन की वियतनाम यात्रा पर चले गए, जिसकी भाजपा ने कड़ी आलोचना की है। भाजपा ने पहले भी उनके विदेश दौरे पर सवाल उठाए हैं और राजनीतिक टकराव के दौरान इनका इस्तेमाल किया है। भाजपा के अनुसार, दिल्ली में विरोध-प्रदर्शनों के दौरान झूठ बोल-बोलकर थक जाने के बाद गांधी छुट्टी मनाने चले गए। पार्टी ने X पर एक वीडियो भी शेयर किया है, जिसमें कथित तौर पर गांधी वियतनाम जाने वाली एक फ्लाइट में बैठे दिख रहे हैं।



बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जेदी

## मछुआरों को आरक्षण देना ही पड़ेगा : संजय निषाद

» निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का भाजपा को ले टुक

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव से पहले योगी सरकार में मंत्री और निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. संजय निषाद की पार्टी दिल्ली में महासम्मेलन कर रही है। मंत्री संजय निषाद संवैधानिक सुरक्षा अधिकार महासम्मेलन कार्यक्रम में पहुंचे। इस दौरान उन्होंने बीजेपी को लेकर ही दो टूक बात कह दी है। इससे सवाल उठना शुरू हो गए हैं कि क्या संजय निषाद एनडीए छोड़ देंगे। संजय निषाद ने इस दौरान कहा, आज ऐतिहासिक स्थल है।

सभी को पार्टी संगठन और सरकार की तरफ से कहींंगा निषाद पार्टी के 2013 से 2026 तक 10 साल बेमिसाल रहे हैं।



अब हम सिर नाव नहीं चुनाव वाले है उन्होंने आगे कहा, बीजेपी भी समझ ले मछुआरों को आरक्षण देना ही पड़ेगा। अगर आरक्षण लागू नहीं किया तो बीजेपी भी धोखा खाएंगी, जिससे हमको धोखा दिया उसने धोखा खाया। संजय निषाद ने यह भी कहा कि हमको आरक्षण चाहिए। हमारे पुरखों ने संविधान लिखवाया। जय भीम वालों ने लागू करवा लिया। अब

जय निषादराज वाले भी लागू करवाएंगे। दिल्ली दूर नहीं है। अभी तो आज सिर्फ कार्यकर्ता और पदाधिकारी हैं जनता ने कूच किया तो क्या होगा। सहयोगी बीजेपी हो या पूर्व सहयोगी सपा हो दोनों ही आज निषाद पार्टी को साथ लेकर चलने की बात कर रही हैं। क्योंकि आज हमारा गांव गांव झंडा लगा है। सपा भी, बसपा भी कांग्रेस भी सब नाम ले रहे हैं। टिकट देने की बात कर रहे हैं, लेकिन साथ कब जब आरक्षण की बात होगी। तब बिना आरक्षण के किसी से बात नहीं अकेले जाएंगे। मंत्री संजय निषाद ने का कहना है कि हाथी वालो ने अपना हक ले लिया, अब हमको भी अपना हक लेना है। आरक्षण मिले तो शांति नहीं तो क्रांति होगी। कितने लोग गर्दन काटने, हाथ काटने के लिए तैयार हैं।

# पंजाब में सियासी व चुनावी राग सता पक्ष पर विपक्ष लगा रहा दाग कांग्रेस, शिअद व भाजपा के निशाने पर आप

- » गृहमंत्री के दौरे पर आप ने भाजपा को घेरा
- » कांग्रेस ने नशे को लेकर मान सरकार को घेरना
- » विवि बवाल के बाद विपक्ष पूरे तेवर में
- » विस-27 के चुनाव पर सबकी नजर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब में चुनाव होने हैं और वहां की सियासत गरमाई है। आप सरकार पर भाजपा के साथ कांग्रेस भी हमलावर है। कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने का है कि वहां की सरकार से जनता का मना हट गया है। जनता बदलाव चाहती है। तो दूसरी ओर गृहमंत्री अमित शाह का पंजाब दौरा हुआ है। जिसे लेकर आप ने भाजपा पर हमला बोला है उसका कहना है कि अपने शासित राज्यों में तो कानून संभाल नहीं पा रहे दूसरी पार्टी की सरकारों पर हमला क्यों बोल रहे। इससे पहले विश्वविद्यालय में हुए बवाल के बाद पंजाब में सियासी मचमच शुरू हो गई थी। शिरोमणि अकाली दल, भाजपा व कांग्रेस ने आप सरकार को घेरना शुरू कर दिया है।

बता दें राज्य में 2027 में विस चुनाव होने हैं ऐसे में राज्य में इस तरह के बवाल के बाद राजनीति होना लाजिमी है। पूरे विपक्ष इस मुद्दे को लेकर लपक लिया। शिरोमणि अकाली दल प्रमुख सुखबीर सिंह बादल ने पंजाब की आप सरकार पर सरकारी संसाधनों और संपत्तियों के दुरुपयोग का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि राज्य को नए प्रयोगों के बजाय विकास, शांति और रोजगार की जरूरत है। बादल ने उनकी पार्टी इस दुरुपयोग की जांच कर जनता का पैसा वसूल करेगी। वहीं कांग्रेस के पूर्व सीएम चरणजीत सिंह चन्नी ने आरोप लगाया कि लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में हुआ बवाल राजनीतिक रूप से प्रेरित है। उन्होंने कहा कि संस्थापक अशोक मित्तल के भाजपा में शामिल होने के बाद आप सरकार यूनिवर्सिटी को निशाना बना रही है। चन्नी ने कैपस में पुलिस कार्रवाई और नुकसान पर भी सवाल उठाए।



## पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने आप को घेरा

पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने आरोप लगाया है कि लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में हुए विरोध-प्रदर्शन और उसके बाद फैली अशांति के पीछे राजनीतिक मकसद था। यह सब यूनिवर्सिटी के मालिक अशोक मित्तल के भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने के बाद हुआ। पत्रकारों से बात करते हुए चन्नी ने यूनिवर्सिटी में हालात को संभालने के तरीके की आलोचना की और हंगामे के दौरान पुलिस की कार्रवाई और छात्रों के साथ किए गए बर्ताव पर चिंता जताई। चन्नी ने कहा कि बाहरी लोग वहां गए और गुंडागर्दी की। इस गुंडागर्दी को खुद पुलिस का समर्थन हासिल था। एलपीयू के फाउंडर अशोक मित्तल भाजपा में शामिल

हो गए हैं और उसके बाद से आम आदमी पार्टी की सरकार इस यूनिवर्सिटी को बर्बाद करने की कोशिश कर रही है। चन्नी ने आगे आरोप लगाया कि यूनिवर्सिटी के बाहर के लोग कैपस में गड़बड़ी फैलाने के लिए आए थे। उन्होंने अशांति के दौरान यूनिवर्सिटी को हुए कथित आर्थिक नुकसान पर भी सवाल उठाए और कहा कि खबरों के मुताबिक करीब 100 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है - मुझे पक्का नहीं पता - तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? उन्होंने छात्रों के खिलाफ



कथित तौर पर जरूरत से ज्यादा बल प्रयोग करने के लिए पुलिस की आलोचना की और पूछा कि और उसके बाद, छात्रों की बुरी तरह पिटाई की गई; इसके लिए कौन जिम्मेदार है? जिन पुलिस अधिकारियों और कर्मियों ने छात्रों को इतनी बेरहमी से पीटा, उनके खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नहीं की गई? और हालात को समय रहते क्यों नहीं संभाला गया? पंजाब के पूर्व डिप्टी सीएम सुखजिंदर सिंह रंधावा ने भी सरकार की देर से की गई कार्रवाई की आलोचना करते हुए कहा कि जो हुआ, उस पर सरकार ने बहुत देर से कार्रवाई की... उन्हें तेजी से कार्रवाई करनी चाहिए थी। छात्र सड़कों पर उतरे, विरोध प्रदर्शन किया। ऐसा नहीं होना चाहिए।

## पुलिस का इस्तेमाल गुंडा फ़ोर्स के तौर पर किया जा रहा

पोस्ट में लिखा था मैं आज माझा के शेर-दिल बेटों द्वारा दिखाए गए अटूट विश्वास और जोशीले संकल्प को सलाम करता हूँ। रैली की सफलता पर सम्मानित समुदाय के नेता और निर्वाचन क्षेत्र के प्रभारी जयदेव वीर सिंह लोपोके और उनकी टीम को बधाई। बादल ने युवा प्रदर्शनकारियों के खिलाफ

पुलिस की कार्रवाई की भी कड़ी निंदा की और आरोप लगाया कि पुलिस का इस्तेमाल गुंडा फ़ोर्स के तौर पर किया जा रहा है। बादल ने कहा, मैं पुलिसकर्मियों से कहना चाहता हूँ कि वे अपना कर्तव्य निभाएं और सही-गलत की पहचान करें। ऐसी बातों पर आंखें मूंद लेना भी गलत काम है।

## शिरोमणि अकाली दल के लिए उठ रहा जन सैलाब

उन्होंने लिखा सोढ़ी पातशाह श्री गुरु रामदास जी की कृपा के लिए मैं अपना आभार कैसे व्यक्त कर सकता हूँ? मैं राजासांसी निर्वाचन क्षेत्र की संगत और माझा की धरती से शिरोमणि अकाली दल के लिए उठे समर्थन के जबरदस्त सैलाब के प्रति बहुत आभारी हूँ। उन्होंने आगे कहा, मैं राजासांसी निर्वाचन क्षेत्र में पंजाब बचाओ रैली के लिए उमड़े अकाली योद्धाओं के जनसैलाब के सामने श्रद्धा से नतमस्तक हूँ। इन तस्वीरों को देखिए आपको एहसास होगा कि यह पूरी भीड़ किसी सरकारी पद या निजी फ़ायदे के लिए शिरोमणि अकाली दल की रैली में नहीं आई थी, बल्कि अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम के कारण आई थी। 2027 के पंजाब विधानसभा चुनाव से पहले राज्य में आप सरकार पर निशाना साधते हुए बादल ने कहा, लोग अब दिल्ली-आधारित पार्टियों और वायरस विघटनकारी राजनीतिक तत्वों की असलियत समझ गए हैं। पंजाब को किसी नए प्रयोग या और धोखे की जरूरत नहीं है। पंजाब को अब विकास, शांति, सांप्रदायिक सद्भाव, सुरक्षा और अपने बच्चों के लिए रोजगार की जरूरत है। पंजाबी अब शिरोमणि अकाली दल की सरकार चाहते हैं।

## आप सरकार सरकारी मशीनरी, पुलिस और सार्वजनिक संपत्ति का गलत इस्तेमाल कर रही : सुखबीर सिंह बादल

शिरोमणि अकाली दल (शिअद) के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल ने पंजाब में आम आदमी पार्टी (आप) सरकार पर सरकारी मशीनरी, पुलिस और सार्वजनिक संपत्ति के गलत इस्तेमाल का आरोप लगाया और कहा कि राज्य को विकास, शांति, सांप्रदायिक सद्भाव, सुरक्षा

और रोजगार की जरूरत है। सरकारी संसाधनों के कथित दुरुपयोग के मुद्दे पर बात करते हुए बादल ने कहा कि पंजाब सरकार को इसकी उचित जांच करानी चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि जिस प्रॉपर्टी में आप नेता अरविंद केजरीवाल रुके थे, उसके



मालिक ने बाद में पार्टी छोड़ दी थी और इस घटनाक्रम से जुड़े हालात

पर सवाल उठाए। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सरकारी प्रॉपर्टी और सरकारी आवासों पर बाहरी लोगों का कब्जा हो रहा है और दावा किया कि आप ने पूरे पंजाब में सरकारी प्रॉपर्टी पर कब्जा कर लिया है। बादल ने कहा कि अगर SAD सत्ता में वापस आती है, तो

उनकी पार्टी सरकारी संसाधनों के कथित दुरुपयोग की जांच करेगी और जिम्मेदार लोगों से जनता का पैसा वसूल करेगी। एक्स पर एक पोस्ट में प्रमुख ने राजासांसी निर्वाचन क्षेत्र के लोगों का पार्टी की पंजाब बचाओ रैली में शामिल होने के लिए आभार भी व्यक्त किया।

## प्रयोग नहीं विकास और सुरक्षा चाहिए

शिरोमणि अकाली दल (शिअद) प्रमुख सुखबीर सिंह बादल ने पंजाब की आप सरकार पर सरकारी संसाधनों और संपत्तियों के दुरुपयोग का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि शिअद की सत्ता में वापसी होने पर इन मामलों की जांच कराकर जनता का पैसा वसूला

जाएगा। बादल के अनुसार पंजाब को अब नए प्रयोगों के बजाय शांति, सुरक्षा और रोजगार की जरूरत है। शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल ने सोमवार को पंजाब में आम आदमी पार्टी सरकार की आलोचना की और सरकारी

संसाधनों, पुलिस और सार्वजनिक संपत्तियों के गलत इस्तेमाल का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि राज्य को विकास, शांति, सांप्रदायिक सद्भाव, सुरक्षा और रोजगार की जरूरत है। संसाधनों के कथित गलत इस्तेमाल के मुद्दे पर बात करते हुए, बादल ने

पंजाब सरकार से इसकी गहन जांच की मांग की। बादल ने यह भी आरोप लगाया कि बाहरी लोगों ने सरकारी संपत्तियों और सरकारी आवासों पर कब्जा कर लिया है और कहा कि आप ने पूरे पंजाब में सरकारी संपत्तियों पर अपना नियंत्रण कर लिया है।

## भाजपा छात्रों का अपमान कर रही : रंधावा

राज्य के रेल मंत्री रवनीत सिंह बिंदू के इस दावे पर कि छात्रों का विरोध प्रदर्शन आम आदमी पार्टी के आगामी कार्यक्रम में बाधा डालने के लिए था, रंधावा ने कहा कि छात्रों का अपमान नहीं किया जाना चाहिए। बिंदू की ऐसी बातें करने की आदत है, जिनका कोई मतलब नहीं है। मैं उन्हें सलाह देता हूँ कि एक राजनेता के पोते होने के नाते वे ऐसा बयान न दें, जिससे राज्य की छवि खराब हो सकती है। कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य मंगर जितेंद्र सिंह ने वोट चोरी की



शिकायतों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि पूरे राज्य से वोट चोरी की शिकायतें मिल रही हैं। वे सिर्फ ईसीआई प्रमुख हैं। लेकिन जिस सिस्टम और बीजेपी की इसमें भूमिका है, उस पर चर्चा होनी चाहिए।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma  
@Editor\_SanjayS

## जिद... सच की

# अपने अंदर के रावण को मारना जरूरी

66

भारत में प्रत्येक पर्व केवल धार्मिक आस्था का अवसर नहीं होता, बल्कि वह समाज को नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक विरासत और सामूहिक चेतना से जोड़ने का माध्यम भी बनता है। दशहरा एक महत्वपूर्ण पर्व है जो धर्म की प्रतिष्ठा, संस्कृति की निरंतरता और राष्ट्रीय चेतना के जागरण का संदेश देता है।

रावण को जलाने मात्र से ही दशहरा नहीं मन जाता है। ये दशहरा तब सार्थक होगा जब हम अपने अंदर की बुराईयों को जलाएं। समरसता, न्याय, समानता, अच्छाई को अपनाकर हम दशहरे के मूल कृतार्थ कर सकते हैं। इस दृष्टि से दशहरा धर्म की विजय के साथ-साथ मानवीय गरिमा और न्यायपूर्ण व्यवस्था की स्थापना का भी पर्व है। भारत में प्रत्येक पर्व केवल धार्मिक आस्था का अवसर नहीं होता, बल्कि वह समाज को नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक विरासत और सामूहिक चेतना से जोड़ने का माध्यम भी बनता है। दशहरा एक महत्वपूर्ण पर्व है जो धर्म की प्रतिष्ठा, संस्कृति की निरंतरता और राष्ट्रीय चेतना के जागरण का संदेश देता है। रावण के पुतले का दहन केवल बाहरी बुराई का अंत नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर छिपे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य जैसी प्रवृत्तियों को त्यागने का संदेश देता है। दशहरा सांस्कृतिक एकता का प्रतीक माना जाता है क्योंकि पूरे भारत में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है।

दशहरा से अधर्म पर धर्म की विजय प्राप्ति का संदेश पूरे राष्ट्र की आध्यात्मिकता एकता का परिचायक है। साथ ही यह पर्व भगवान श्रीराम द्वारा अहंकार और अधर्म के प्रतीक रावण पर विजय का प्रतीक है, जो सिखाता है कि अंततः सत्य की ही जीत होती है। भारतीय चिंतन में धर्म का अर्थ केवल पूजा-पद्धति या धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। धर्म का व्यापक अर्थ है कर्तव्य, न्याय, सत्य, मर्यादा और लोककल्याण। दशहरे का मूल संदेश इसी व्यापक धर्मबोध में निहित है। रामायण की परंपरा के अनुसार, भगवान श्रीराम ने रावण का वध करके अन्याय और अहंकार पर विजय प्राप्त की। इसी प्रकार, देवी दुर्गा द्वारा महिषासुर पर विजय शक्ति, साहस और न्याय की स्थापना का प्रतीक है। यह परंपरा हमें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने तथा निर्बल और पीड़ित लोगों की रक्षा करने की प्रेरणा देती है। राष्ट्रीय चेतना केवल राष्ट्र के प्रति भावनात्मक लगाव का नाम नहीं है। इसमें देश की सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान, संविधान के मूल्यों के प्रति निष्ठा, नागरिक कर्तव्यों का निर्वहन और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना भी शामिल है। दशहरा इन मूल्यों को सुदृढ़ करने की प्रेरणा देता है। भारत की राष्ट्रीय एकता उसकी विविध भाषाओं, धर्मों, परंपराओं और जीवन-पद्धतियों के बीच पारस्परिक सम्मान पर आधारित है। दशहरा इस सांस्कृतिक विविधता के भीतर विद्यमान साझा नैतिक मूल्यों को रेखांकित करता है। सत्य, न्याय, साहस, करुणा और लोककल्याण जैसे आदर्श किसी एक समुदाय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समूची मानवता के लिए प्रासंगिक हैं।

Sanjay

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

# पहाड़ रो नहीं सकते इसलिए दरकते हैं

अमरेंद्र किशोर

सतलुज किनारे बसे उरनी गांव में एक स्थानीय निवासी अपने घर की दीवार पर पड़ी दरार को उंगली से छूता है, जैसे कोई बुजुर्ग अपने बच्चे का घाव सहलाता हो। गांव के नीचे से करछम वांगतू परियोजना की सुरंगें गुजरती हैं, और उस व्यक्ति की शिकायत मुआवजे से ज्यादा इस बात की है कि सुरंग बिछाने से पहले किसी ने उनसे पूछा तक नहीं। दरार देखने में छोटी है, पर उसमें एक पूरे समाज की अनसुनी पीड़ा दर्ज है। यहीं विकास की हमारी परिभाषा कठघरे में खड़ी होती है। बिजली को प्रगति का पर्याय मान लिया और पहाड़ को ऐसा संसाधन, जिससे ऊर्जा निचोड़ी जा सके। जबकि पहाड़ किसी के लिए संसाधन है तो किसी के लिए घर, देवता और स्मृति। किन्नौर में सतलुज, बास्पा और स्पीति की घाटियां दुनिया के सबसे नाजुक भूभागों में गिनी जाती हैं।

वहीं नाथपा-झाकड़ी जैसी डेढ़ हजार मेगावाट की परियोजना की मुख्य सुरंग लगभग सत्ताईस किलोमीटर लंबी है। करछम वांगतू, बास्पा-दो, कशांग और शोंगटोंग-करछम जैसी परियोजनाओं के साथ दर्जनों और प्रस्तावित हैं। हर परियोजना नदी को सुरंग में मोड़ती है और पहाड़ के भीतर किलोमीटरों लंबा खोखलापन छोड़ जाती है। एक सुरंग का बोझ पहाड़ शायद सह ले, पर जब एक ही घाटी में सुरंगों की कतार लग जाए, तो उनका सामूहिक असर किसी एक परियोजना की रिपोर्ट में दर्ज नहीं होता। हमारे नियोजन की सबसे बड़ी वैचारिक चूक यही है कि हम पेड़ गिनते हैं और जंगल को नहीं देखते। इस चूक की पहली कीमत पानी चुका रहा है, और पहाड़ में पानी का मतलब सिर्फ प्यास नहीं होता। वह बुजुर्गों की बनाई परंपरा है, खेत की सांस है, सेब के बगीचों का भविष्य है और मवेशियों की जिंदगी है। पहाड़ के गांव नलकों से नहीं, प्राकृतिक स्रोतों से जीते हैं। सुरंग खोदते समय चट्टानों की जल-धाराएं कट जाती हैं और भूजल

सुरंग में रिसकर बह जाता है। साउथ एशिया नेटवर्क ऑन डैम्स, रिवर्स एंड पीपल ने करछम वांगतू के असर में आए चोलिंग, यूला, उरनी, रुन्नाग, मीरू और चुगांव जैसे गांवों में स्रोतों के सूखने और जमीन की नमी घटने को दर्ज किया है। भूस्खलन की तस्वीरें अखबारों में छपती हैं, पर सूखता हुआ झरना किसी सुर्खी में नहीं आता।

जहां पानी जाता है, वहां खेती जाती है, फिर रोजगार जाता है और अंत में लोग जाते हैं। इसी धीमी प्रक्रिया से आशंका है कि आने वाले दशकों में किन्नौर के गांवों से पलायन की लहर उठे। दीवारों की दरारें इसी कहानी का दूसरा अध्याय हैं। सुरंग के लिए होने



वाली ब्लैस्टिंग के कंपन घरों की नींव हिला देते हैं। निगुलसरी और झाकड़ी में मई, 2014 में दर्ज हुई दरारें, यूला का फटा हुआ मकान और चुगांव की गौशाला की दीवारें, सब इसी सिलसिले की कड़ियां हैं।

किन्नौर संविधान की पांचवीं अनुसूची का क्षेत्र है, जहां ग्राम सभा की भूमिका निर्णायक मानी गई है, फिर भी सुरंगें गांवों के नीचे से निकलती रहीं और लोगों को पता तब चला, जब उनके घर चटकने लगे। वर्ष 2021 ने इस चेतावनी को और साफ कर दिया। जुलाई में बास्पा घाटी के बटसेरी में पत्थर गिरने से नौ पर्यटकों की मौत हुई। अगस्त में राष्ट्रीय राजमार्ग-5 पर निगुलसरी में पहाड़ ऐसा दरका कि बस समेत कई वाहन मलबे में दब गए और करीब अट्ठाईस लोग नहीं लौटे। इसके बाद 'नो मीन्स नो' अभियान तेज हुआ

और किन्नौर तथा लाहौल-स्पीति के कई गांव उससे जुड़े। स्थानीय लोगों का अनुभव यह है कि चट्टानों के गिरने और भूस्खलन की घटनाएं उन्हीं इलाकों में बढी हैं, जहां बांध, पावरहाउस या सुरंगें बनी हैं। हिमधारा कलेक्टिव के 2012 से 2016 के अध्ययन के अनुसार, 1980 से 2014 के बीच किन्नौर में गैर-वन कार्यों के लिए डायवर्ट हुई वन भूमि का लगभग नब्बे प्रतिशत हिस्सा जलविद्युत परियोजनाओं और ट्रांसमिशन लाइनों के हिस्से में गया। जंगल ढलानों को थामने वाली अदृश्य बाहें होते हैं। ऊपर से नदियों में फेंका गया मलबा बाढ़ की ताकत को कई गुना कर देता है। किन्नौर ऊंचे भूकंपीय जोखिम वाला क्षेत्र है और

1975 का भूकंप आज भी याद दिलाता है। उधर ग्लेशियर पिघल रहे हैं, बादल फटने और अचानक बाढ़ की घटनाएं बढ़ रही हैं। वर्ष 2023 के मानसून ने पूरे हिमाचल में हजारों करोड़ रुपये का नुकसान दिखाया। मौजूदा रफ्तार नहीं बदली तो ऐसे संकट बार-बार लौटेंगे और हर बार पहले से भारी होंगे।

अब सवाल पूछने का वक्त है। हरपरियोजना का आकलन अलग-अलग क्यों होता है, जबकि पहाड़ एक ही है? किसी घाटी की धारण क्षमता और सभी परियोजनाओं के सामूहिक असर का अध्ययन कहाँ है? जिस मलबे का निपटारा नदी किनारे कर दिया गया, उसका हिसाब कौन देगा? जिन गांवों के स्रोत सूख गए, उन्हें स्थायी पेयजल देने की जिम्मेदारी किसकी है? इन सवालों के जवाब कोई एक दफ्तर नहीं, पूरी व्यवस्था की नीयत देगी।

दिनेश सी. शर्मा

हाल ही में ट्रम्प प्रशासन ने स्थायी श्रम प्रमाणन कार्यक्रम के तहत विदेशी कामगारों के लिए वीजा पर रोक लगाने की घोषणा कर दी। यह एक ऐसा कदम है, जिसका प्रभाव शीर्ष अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनियों के साथ-साथ प्रमुख भारतीय आउटसोर्सिंग कंपनियों पर भी पड़ेगा। दलील है कि प्रौद्योगिकी उद्योग अमेरिकी कामगारों को काम पर रखने से बचने के लिए रोजगार-आधारित श्रम कार्यक्रम का दुरुपयोग करता है। नए प्रतिबंधों से बड़ी संख्या में भारतीयों सहित सभी विदेशी प्रौद्योगिकी कामगारों की नियुक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है, जिन्होंने ग्रीन कार्ड और अंततः नागरिकता अर्जित करने के लिए एच-1बी वीजा का उपयोग किया था। एक के बाद एक आए अमेरिकी राष्ट्रपतियों ने घरेलू राजनीतिक उद्देश्यों के लिए एच-1बी वीजा कोटा को लटकाए रखा।

वर्ष 2008 में, राष्ट्रपति ओबामा ने विदेशों से आउटसोर्सिंग करवाने वाली कंपनियों के लिए कर छूट समाप्त करने की घोषणा की थी। बाद में जो बाइडेन ने भी ऐसा ही किया। अमेरिकी प्रौद्योगिकी कंपनियों ने सस्ते श्रम की उपलब्धता का लाभ उठाने पर ज्यादा ध्यान दिया। सन 1960 के दशक में, उन्होंने सेमीकंडक्टर विनिर्माण के साथ ऐसा किया, जो उस समय भारी श्रम-साध्य कार्य था। कालांतर में उन्होंने सॉफ्टवेयर सेवाओं और प्रोग्रामिंग के मामले में यही किया। फेयरचाइल्ड सेमीकंडक्टर के अध्यक्ष रॉबर्ट नॉयस ने विनिर्माण सुविधाएं स्थापित करने के उद्देश्य से 1960 के दशक में भारत आदि देशों का दौरा किया। भारत ने इनकार किया, तो वे हांगकांग चले गए। नॉयस

## भारतीय प्रतिभाओं पर बनी रहेगी अमेरिकी निर्भरता



ने कुछ साल बाद इंटरनेट की स्थापना की। अन्य अमेरिकी कंपनियों ने इलेक्ट्रॉनिक्स और इंटीग्रेटेड सर्किट विनिर्माण के लिए सिंगापुर, मलेशिया और ताइवान को चुना, जिससे ये देश अगले दो दशकों में प्रौद्योगिकी विनिर्माण के केंद्र बन गए। भारत ने 1970 और 1980 के दशक में मौका संभालते हुए अमेरिकी ग्राहकों के लिए सेमीकंडक्टर डिजाइन, सॉफ्टवेयर सेवाओं और प्रोग्रामिंग में काम करना शुरू किया।

अमेरिकी प्रौद्योगिकी उद्योग के साथ भारत का जुड़ाव कई पड़ावों से गुजरा है। इसकी शुरुआत छोटे पैमाने पर 'बॉडी शॉपिंग' से हुई, जिसमें भारतीय इंजीनियर अमेरिकी ग्राहकों के लिए अल्पकालीन अनुबंध के आधार पर काम करते थे। वे काम पूरा होने के बाद लौट आते थे। अगले चरण में, यह एक ऑनसाइट मॉडल के रूप में विकसित हुआ, जिसमें भारतीय कंपनियों ने अपने उन श्रमिकों को भेजा, जो दीर्घकालिक परियोजनाओं पर काम करते हुए अमेरिकी कंपनियों के कार्यबल का हिस्सा बने। जैसे-जैसे भारतीय कंपनियों ने अपने ग्राहकों का विश्वास हासिल

किया और संचार प्रणाली के बुनियादी ढांचे में सुधार हुआ, इस ऑनसाइट काम का कुछ हिस्सा भारत से ऑफशोर मॉडल के रूप में निष्पादित होना शुरू हो गया। जल्द ही, अमेरिकी कंपनियों को अहसास हुआ कि अमेरिका में भारतीयों को बुलाकर काम पर रखने और भारतीय कंपनियों पर निर्भर रहने के बजाय, क्यों न वे सीधे खुद भारतीयों को काम पर रखें और भारत में परिचालन स्थापित करें। यह और भी कफायती था। वर्ष 1990 के दशक के अंत में माइक्रोसॉफ्ट ने शुरुआत की और कई अन्य तकनीकी कंपनियों ने इसका अनुसरण किया। फिर बैंकों, बीमाकर्ताओं, लॉजिस्टिक्स कंपनियों, एयरलाइंस, कानूनी फर्मों, वैश्विक परामर्श और ऑडिटिंग दिग्गजों तथा अन्य कंपनियों ने भी ऐसा ही किया।

आज वे सभी अपने अधिकांश बैकरूम संचालन या व्यावसायिक प्रक्रियाओं को बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई, नोएडा आदि में स्थानांतरित कर चुके हैं। पिछले दो दशकों में इंजीनियरिंग, अनुसंधान एवं विकास और उत्पाद विकास की आउटसोर्सिंग के साथ-साथ

आउटसोर्सिंग व्यवसाय और अधिक विविध होता गया। बड़े निगमों ने अपने कुछ मुख्य कार्यों को संभालने के लिए भारत में समर्पित इकाइयां स्थापित कीं। यह बदलाव लागत-बचत से हटकर नवाचार, अनुसंधान और आईपी (बौद्धिक संपदा) निर्माण की ओर बढ़ रहा था। आज लगभग हर फॉर्च्यून-500 कंपनी का बेंगलुरु या हैदराबाद में पूर्ण स्वामित्व वाला वैश्विक क्षमता केंद्र (जीसीसी) है। वर्ष 2025 में, ऐसे केंद्रों की संख्या 2,100 से अधिक थी, जिनमें 23 लाख 60 हजार लोगों को रोजगार मिला हुआ है। इससे लगभग 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर का कारोबार होता है। प्रत्येक तकनीकी परिवर्तन में—मेनफ्रेम से लेकर मिनी और माइक्रो कंप्यूटर, इंटरनेट और डॉटकॉम, वाई2के, मोबाइल एवं सोशल मीडिया, क्लाउड और बिग डेटा तक—भारतीय प्रौद्योगिकी कंपनियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अब वे एजेंटिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) रोलआउट और विभिन्न क्षेत्रों में गहन तकनीकी तैनाती के क्षेत्र में भी यही कर रही हैं। तो, प्रौद्योगिकी आउटसोर्सिंग की प्रक्रिया अमेरिका और भारत में गहराई से जुड़ी है और अपरिवर्तनीय है। बड़ी तकनीकी कंपनियों को तेजी से रोलआउट, वैश्विक सहायता, विस्तार और अन्य लाभों के लिए भारतीय इंजीनियरों और तकनीकी प्रतिभा की आवश्यकता है। वहीं, भारतीय कंपनियों को अपनी आय बनाए रखने, ऑपरेटिंग सिस्टम (विंडोज, ऐपल आईओएस, एंड्रॉइड) और विकास के लिए क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर तक पहुंच के लिए अमेरिकी व्यवसाय की आवश्यकता है। पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय इंजीनियरों ने अपने फायदे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किए हैं।

# कमर दर्द में रोज करें ये योगासन, मिलेगी राहत

आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में कमर दर्द अब सिर्फ बुजुर्गों की समस्या नहीं रह गया है। ऑफिस में घंटों कुर्सी पर बैठकर काम करना ज्यादातर लोगों की दिनचर्या का हिस्सा बन गया है। सुबह से शाम तक कंप्यूटर या लैपटॉप के सामने बैठे रहना भले ही काम के लिए जरूरी हो, लेकिन इसका असर धीरे-धीरे कमर और पीठ पर पड़ सकता है। लंबे समय तक एक ही पोजीशन में गलत तरीके से बैठने और शरीर में मूवमेंट की कमी के कारण कमर की मांसपेशियों पर लगातार दबाव पड़ता है। यही वजह है कि कम उम्र में ही बड़ी संख्या में लोग कमर में दर्द की शिकायत के साथ डॉक्टर के पास पहुंच रहे हैं। जो लोग दिनभर डेस्क पर काम करते रहते हैं और बहुत कम चलते-फिरते हैं, उनमें कमर में जकड़न और दर्द की शिकायत ज्यादा देखी जाती है। कई बार ऑफिस से घर लौटने के बाद दर्द ज्यादा महसूस होता है। लंबे समय तक बैठे रहने के कारण कमर पर लगातार दबाव बना रहता है जिससे आपको दर्द हो सकता है। हालांकि अगर दर्द लगातार बना रहे, तेजी से बढ़कर पैरों तक पहुंच जाए या पैरों में सुन्नपन और कमजोरी महसूस होने लगे तो यह चेतावनी का संकेत हो सकता है। ऐसे में तुरंत डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी हो जाता है।



## अर्ध चंद्रासन

आप सीधी खड़ी हो जाएं। अब दाहिने हाथ को कंधे से ऊपर उठाएं और शरीर को धीरे-धीरे बाईं ओर झुकाएं। कुछ सेकंड रुककर वापस सीधी स्थिति में आएँ। यही प्रक्रिया दूसरी तरफ दोहराएं। इस दौरान शरीर का आकार अर्धचंद्र जैसा दिखाई देगा। इसे दोनों तरफ तीन से पांच बार दोहराएं।

## भुजंगासन

इस आसन को करने के लिए पेट के बल लेटें और हथेलियों को कंधों के पास रखें। अब सांस भरते हुए शरीर के ऊपरी हिस्से को धीरे-धीरे ऊपर उठाएं। आप अपनी क्षमता के अनुसार ही उठें और सांस छोड़ते हुए वापस नीचे आएँ। तीन से पांच बार दोहराने से आपको लाभ मिलेगा।

## कटि चक्रासन

दोनों पैरों के बीच कंधों जितना गैप रखें। अब दोनों हाथों को कंधों के समानांतर सामने की ओर रखें। फिर धीरे-धीरे ऊपरी शरीर को दाईं ओर घुमाएं, जबकि निचला शरीर स्थिर रखें। फिर वापस आएँ और दूसरी तरफ घुमाएं। गति बहुत धीमी और नियंत्रित रखें। इसे तीन से पांच बार दोहराएं।

## कैट-काऊ पोस्चर

आप हाथों और घुटनों के बल आ जाएँ। सांस भरते हुए कमर को नीचे की ओर ले जाएँ और गर्दन को ऊपर उठाएं। सांस छोड़ते हुए कमर को ऊपर की ओर गोल करें और गर्दन को नीचे लाएं। आप इसे चार से पांच बार धीरे-धीरे दोहराएं।

## सुपाइन स्पाइनल ट्विस्ट

### बैकवर्ड बेंडिंग

दोनों पैरों के बीच लगभग छह इंच का गैप रखें और दोनों हाथों को कमर पर रखें। सांस भरते हुए धीरे-धीरे हल्का पीछे की ओर झुकें और फिर सांस छोड़ते हुए वापस सामान्य स्थिति में आएँ। यह क्रिया चार से पांच बार करें। ध्यान दें कि बहुत ज्यादा पीछे न झुकें।

सुपाइन स्पाइनल ट्विस्ट जिसे संस्कृत में सुप्त मत्स्येन्द्रासन कहा जाता है। इसे करने के लिए सबसे पहले पीठ के बल लेटें और दोनों हाथों को कंधों की सीध में फैलाएं। अब दोनों घुटनों को मोड़कर धीरे-धीरे एक तरफ जमीन की ओर ले जाएँ, जबकि सिर को विपरीत दिशा में मोड़ें। फिर दूसरी तरफ दोहराएं। इससे रीढ़ और कमर को हल्का स्ट्रेच और आराम मिलेगा।

## सेतुबंधासन

आप पीठ के बल लेटकर घुटनों को मोड़ें और पैरों को जमीन पर रखें। हथेलियों से जमीन को दबाते हुए कमर और कूल्हों को धीरे-धीरे ऊपर उठाएं। सिर, कंधे और पैर जमीन पर रहें। अपनी क्षमता के अनुसार कुछ सेकंड रुकें और वापस आएँ। इसे भी तीन से पांच बार करें।



## हंसना मना है

पत्नी- तुम मुझे सोते हुए गाली दे रहे थे, पति- नहीं तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है, पत्नी-क्या? पति- यही, कि मैं सो रहा था... तब से वाकई मैं पति की नींद गायब है...

एक बार दो चूहे के बच्चे बाइक पर जा रहे थे...रास्ते में उन्हें शेर का बच्चा मिला... उसने कहा मुझे भी बिटा लो, कुछ सोचने के बाद चूहे ने कहा...देख ले, वरना बाद में तेरी मम्मी बोलेंगी गुंडों के साथ घूमता है।

गणित की क्लास चल रही थी, टीचर ने पूछा- बताओ 1000 किलो = एक टन, तो 3000 किलो कितना होगा? पप्पू- जी सर...टन, टन, टन, टीचर को समझ नहीं आ रहा कि शाबासी दूं या क्लास से बाहर निकालूं।

बेटा बाप से- पापा से सादू का रिश्ता क्या होता है, बाप- बेटा जब दो आदमी एक ही कंपनी से टगे जाते हैं तो सादू कहलाते हैं... तभी वहां मम्मी आ गई, बस फिर क्या है तब से मम्मी गुस्से से लाल हैं...और पापा डर के मारे पीले हो गये हैं।

महिला कैशियर- मुझे कुछ दिन की छुट्टी चाहिए, क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरी सुन्दरता कुछ कम हो गई है। बैंक मैनेजर- क्या मतलब? महिला कैशियर- पुरुषों ने पैसे गिनकर लेने शुरू कर दिए हैं।

## कहानी

## लक्ष्य पर ध्यान

एक बार स्वामी विवेकानंद अमेरिका में थे। वो दिन वो घूमते-घूमते एक पुल के पास पहुंचे। उनकी नजर पुल पर खड़े बच्चों पर गई। सभी बच्चे बंदूक से पुल के नीचे बहती बड़ी-सी नदी में तैर रहे अंडों के छिलकों पर निशाना लगाने की लगातार कोशिश कर रहे थे। कई कोशिशों के बाद भी वो एक बार भी अंडे के छिलके पर सही निशाना नहीं लगा पाए। यह देखकर स्वामी विवेकानंद बड़े हैरान हुए। उनके मन में हुआ कि मुझे भी एक बार कोशिश करनी चाहिए। उन्होंने बच्चों से बंदूक मांगी और खुद निशाना लगाने लगे। स्वामी ने बंदूक तानी और अंडे के छिलके पर पहली बार में ही निशाना लगा लिया। पहला निशाना सही लगने के बाद उन्होंने एक के बाद एक कई सारे अंडे के छिलकों पर सही निशाना लगाया। स्वामी के निशाने की कला को देखकर बच्चे हैरान रह गए। बच्चों ने स्वामी से पूछा कि आखिर वो कैसे एक के बाद एक सही निशाना लगा रहे हैं। आगे बच्चों ने कहा कि वो बहुत देर से उन छिलकों पर निशाना लगाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन ऐसा हो नहीं रहा है। हमें भी बताइए सही तरीके से निशाना लगाने के लिए क्या करना चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने बच्चों को जवाब देते हुए कहा कि इस दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं है, जो किया नहीं जा सकता। दुनिया में कोई भी काम असंभव नहीं है। बस अपना सारा ध्यान उस काम की तरफ लगाओ, जिसे तुम्हें करना है या जिसे तुम कर रहे हो। उन्होंने आगे बताया कि अगर निशाना लगाते वक्त तुम्हारा सारा ध्यान अंडे के छिलके पर होता, तो तुम निशाना ठीक तरीके से लगा पाते।

कहानी से सीख: लक्ष्य को पूरा करने की चाहत रखने वाले को हमेशा पूरा ध्यान उस लक्ष्य पर ही रखना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्य चूकता नहीं है।

## 7 अंतर खोजें



## जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951



पंडित संदीप आनंद शास्त्री

|                  |                                                                                                                                                   |                    |                                                                                                                                                         |
|------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>मेघ</b><br>   | उच्च अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, काम गति पकड़ेगा। व्यापार में लाभ के नए रास्ते खुलेंगे। परिवार में धार्मिक या शुभ चर्चा हो सकती है।               | <b>तुला</b><br>    | नौकरी में आपका प्रभाव और दायरा बढ़ सकता है। व्यापारिक नीतियां सफल होंगी, अच्छा मुनाफा होगा। पारिवारिक जीवन में सौहार्द और खुशहाली रहेगी।                |
| <b>वृषभ</b><br>  | कार्यस्थल पर शांतिपूर्वक और योजनाबद्ध तरीके से काम करें। व्यापारिक सौदों में विवेक और धैर्य से काम लें। पारिवारिक जीवन में तालमेल और मिठास रहेगी। | <b>वृश्चिक</b><br> | कार्यक्षेत्र में विरोधियों पर आपकी जीत होगी। व्यापार में लाभ की दर बढ़ने की पूरी संभावना है। परिवार का समर्थन आपकी हिम्मत बढ़ाएगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। |
| <b>मिथुन</b><br> | करियर में उन्नति के नए रास्ते साफ होंगे। व्यापार में लिया गया समझदारी भरा फैसला फायदा देगा। दायित्व जीवन में मधुरता और तालमेल बना रहेगा।          | <b>धनु</b><br>     | रचनात्मक क्षेत्र से जुड़े लोगों को बड़ी सफलता मिलेगी। व्यापार में नया निवेश करने का सही समय है। संतान पक्ष से संतोषप्रद और शुभ समाचार मिलेगा।           |
| <b>कर्क</b><br>  | सहकर्मियों का भरपूर सहयोग कार्य आसानी से पूरे कराएगा। व्यावसायिक यात्राओं से धन लाभ संभव है। पारिवारिक माहौल आनंददायक और शांतिपूर्ण रहेगा।        | <b>मकर</b><br>     | कार्यस्थल पर अतिरिक्त जिम्मेदारियां मिल सकती हैं। व्यापार में लिखा-पढ़ी का काम ध्यान से करें। परिवार में मिलकर पुरानी समस्याओं को सुलझाएं।              |
| <b>सिंह</b><br>  | कार्यक्षेत्र में आपकी प्रतिभा का सम्मान होगा। व्यापार में नए निवेश से बड़ा फायदा हो सकता है। प्रेम संबंधों में नया उत्साह और विश्वास दिखेगा।      | <b>कुम्भ</b><br>   | अपनी बुद्धिमत्ता से सभी कठिन काम आसानी से निपटाएंगे। व्यापार में नए सौदों पर मुहर लग सकती है। प्रियजनों के साथ खुशनुमा समय बीतेगा। पीली वस्तु दान करें। |
| <b>कन्या</b><br> | दफ्तर में पूरी सजगता के साथ काम करें। व्यापार में हड़बड़ी में कोई फैसला न लें। परिवार के बुजुर्गों का आशीर्वाद और सहयोग मिलेगा।                   | <b>मीन</b><br>     | कार्यस्थल पर आपकी सलाह और सुझावों को माना जाएगा। व्यापार में मुनाफे के नए मौके मिलेंगे। परिवार में किसी मांतालिक कार्य की चर्चा हो सकती है।             |

## रामायण का 'रावण तांडव' रिलीज



रणवीर कपूर, यश और साई पल्लवी स्टार बिग बजट फिल्म रामायण रिलीज के लिए तैयार है। दिवाली 2026 पर रिलीज होने वाली यह फिल्म काफी चर्चा में है। इसे भारत की सबसे महंगी वीएफएक्स वाली फिल्मों में से एक बताया जा रहा है। मेकर्स लगातार फिल्म के प्रोमो और गाने रिलीज कर रहे हैं। इसी कड़ी में अब यश का गाना 'रावण तांडव' भी रिलीज हो गया है। इस गाने में यश भगवान शिव की प्रतिमा के सामने तांडव करते नजर आ रहे हैं। वह भोलेनाथ को खुश करने के लिए तांडव करते दिखाई देते हैं। यश ने जिस तरह इस गाने में परफॉर्म किया है, उसे देखकर फैस उनकी जमकर तारीफ कर रहे हैं। फिल्म रामायण का 'रावण तांडव' रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर चर्चा में आ गया है। दर्शकों को यह गाना काफी पसंद आ रहा है। लोगों को गाने का साउंड डिजाइन और यश का डांस दोनों पसंद आ रहे हैं। फैस यश की जमकर तारीफ कर रहे हैं और कह रहे हैं कि वह पूरी तरह रावण के किरदार में नजर आ रहे हैं। रणवीर कपूर स्टार रामायण को मेकर्स दो हिस्सों में रिलीज करेंगे। पहले भाग में राम के जन्म से लेकर सीता हरण तक की कहानी दिखाई जाएगी। वहीं, दूसरे भाग में रावण वध की कहानी दिखाई जाएगी।

फिल्म रामायण पार्ट 1 इस साल दिवाली 8 नवंबर के मौके पर रिलीज होगी। फिल्म को लेकर दर्शकों में काफी एक्साइटमेंट है और वे इसका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

दीपिका और रणवीर के घर 19 सितंबर 2026 को दूसरी बेटी, देवी पादुकोण सिंह का जन्म हुआ। अब दशहरा के मौके पर उन्होंने उसके नाम की घोषणा की है। इस घोषणा के जरिए फैस को उनके पूरे परिवार की एक झलक भी देखने को मिली। सोशल मीडिया पर एक बेहद भावुक और खूबसूरत पारिवारिक तस्वीर शेयर करते हुए दीपिका ने अपनी दूसरी बेटी के नाम का आधिकारिक खुलासा किया। तस्वीर में रणवीर और दीपिका अपनी बड़ी बेटी दुआ पादुकोण सिंह को संभाले हुए हैं, जबकि नन्हीं दुआ अपनी छोटी बहन देवी को बड़े प्यार से गोद में लिए नजर आ रही हैं। इस दिल छू लेने वाली तस्वीर के साथ दीपिका ने कैप्शन लिखा, प्यार और खुशियों से भरी... देवी पादुकोण सिंह। दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह का रिश्ता 2012 में शुरू हुआ था। संजय लीला भंसाली की फिल्म गोलियों की रासलीला राम-लीला (2013)



## गौरव खन्ना की टीवी पर वापसी, श्रद्धा आर्या के साथ करेंगे स्क्रीन शेयर

टीवी अभिनेता गौरव खन्ना और श्रद्धा आर्या जल्द ही एकता कपूर के नए शो में

मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे। हाल ही में दोनों का मुहूर्त पूजा करते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है, जिसे देखकर फैस काफी उत्साहित हैं। हालांकि, अभी तक इस आगामी शो के नाम और कहानी का खुलासा नहीं किया गया है। गौरव खन्ना टीवी पर नए किरदार के साथ वापसी करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस बार उनके साथ टीवी की पॉपुलर

एक्ट्रेस श्रद्धा आर्या भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। हाल ही में गौरव खन्ना और श्रद्धा आर्या ने साथ में मुहूर्त पूजा की। इससे जुड़ा वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में गौरव खन्ना और श्रद्धा आर्या साथ में पूजा करते नजर आ रहे हैं। इस दौरान गौरव व्हाइट कुर्ता-पजामा में दिखाई दिए, जबकि श्रद्धा भी व्हाइट आउटफिट में

नजर आईं। दोनों साथ में पूजा करते हुए काफी खुश नजर आए। उन्हें साथ देखकर फैस भी काफी एक्साइटेड दिखे। वीडियो में गौरव और श्रद्धा की केमिस्ट्री देखकर फैस उनकी खूब तारीफ कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, ये साथ में काफी अच्छे लग रहे हैं। वहीं, दूसरे यूजर ने लिखा, अब इंतजार नहीं हो रहा है। बता दें कि गौरव खन्ना और श्रद्धा आर्या के इस नए शो को एकता कपूर

प्रोड्यूस करने वाली हैं। दोनों कलाकार पहले भी एकता कपूर के शो में काम कर चुके हैं। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि इस बार एकता कपूर, गौरव खन्ना और श्रद्धा आर्या के साथ क्या नया लेकर आती हैं। दर्शकों को भी दोनों की जोड़ी को एक साथ देखने का बेसब्री से इंतजार है। हालांकि, अभी तक शो के नाम और इसकी कहानी से जुड़ी कोई जानकारी सामने नहीं आई है।

# फिल्म जगत को फिर दहशत के दौर में नहीं जाने दिया जा सकता : संजय शर्मा

फिल्म सहिया के निर्माता एवं निर्देशक संजय शर्मा ने अभिनेता टाइगर श्रॉफ पर हुई गोलीबारी की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि फिल्म उद्योग से जुड़े लोगों को निशाना बनाने की घटनाएं बेहद गंभीर और चिंताजनक हैं। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार और मुंबई पुलिस से कलाकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने, धमकियों पर तत्काल कार्रवाई करने तथा संगठित आपराधिक गिरोहों के खिलाफ कठोर कदम उठाने की मांग की है। संजय शर्मा ने कहा कि किसी कलाकार पर हमला पूरे फिल्म जगत के भीतर असुरक्षा पैदा करता है। कलाकार अपनी मेहनत और प्रतिभा से लोगों का मनोरंजन करते हैं, देश को पहचान देते हैं, और लाखों लोगों की आजीविका से जुड़े उद्योग को आगे बढ़ाते हैं। उन्हें डर और धमकियों के साये में काम करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि फिल्म उद्योग पहले भी धमकियों, जबरन वसूली और हमलों का दौर देख चुका है। उस दौर

फिल्म सहिया के निर्माता एवं निर्देशक ने की टाइगर श्रॉफ पर हुई गोलीबारी की कड़ी निंदा

की दहशत दोबारा लौटने देना बेहद खतरनाक होगा। किसी अभिनेता, निर्माता, निर्देशक, गायक या अन्य फिल्मकर्मी को यह सोचकर घर से नहीं निकलना चाहिए कि उसकी जान को खतरा हो सकता है। शर्मा ने कहा कि मुंबई सपनों और रचनात्मकता का शहर है। यहां लोग सिनेमा बनाने आते हैं, अपनी जान बचाने की लड़ाई लड़ने नहीं। फिल्म जगत में भय का माहौल बनने का असर कलाकारों के परिवारों, शूटिंग पर मौजूद कर्मचारियों और पूरे कामकाज पर पड़ता है। सरकार को ऐसा भरोसा पैदा करना होगा कि अपराधियों की धमकियों से किसी का काम और जीवन नहीं रुकेगा। उन्होंने कलाकारों को मिल रही धमकियों के मामलों में खुफिया तंत्र को और मजबूत करने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि सुरक्षा व्यवस्था केवल घटना हो जाने के बाद सक्रिय होने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। खतरे की समय रहते पहचान, धमकी देने वालों की निगरानी और संबंधित

एजेंसियों के बीच सूचनाओं का त्वरित आदान-प्रदान आवश्यक है। संजय शर्मा ने कहा कि शिकायत दर्ज कराने और पुलिस से मदद लेने की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए, जिसमें पीड़ित व्यक्ति बिना झिझक अपनी बात रख सके और उसे कार्रवाई की जानकारी भी मिले। उन्होंने कहा, जो गैंगस्टर फिल्म उद्योग के लोगों को धमकाते हैं, उनके खिलाफ कानून के तहत कठोर कार्रवाई होनी चाहिए। हमले को अंजाम देने वालों के साथ उसकी साजिश रचने, हथियार उपलब्ध कराने, आर्थिक मदद देने और धमकियां पहुंचाने वाले पूरे नेटवर्क तक जांच पहुंचनी चाहिए। अपराधियों को स्पष्ट संदेश मिलना चाहिए कि किसी कलाकार को डराकर वे कानून से बच नहीं सकते। शर्मा ने फिल्म संगठनों से भी कलाकारों और कर्मचारियों की सुरक्षा के मुद्दे पर एकजुट होकर सरकार तथा पुलिस के साथ समन्वय करने की अपील की। उन्होंने कहा कि सुरक्षित माहौल हर कलाकार और फिल्मकर्मी का अधिकार है। हम टाइगर श्रॉफ और उनके परिवार के

साथ खड़े हैं। इस घटना की निष्पक्ष और गहन जांच हो तथा जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। फिल्म उद्योग को सुरक्षा का ठोस भरोसा चाहिए।



## दीपिका-रणवीर ने दूसरी नन्हीं परी का नाम देवी पादुकोण सिंह रखा



## उस्ताद की शर्त के चलते मैने कभी शराब को हाथ तक नहीं लगाया : दलेर मेहंदी

दलेर मेहंदी को लेकर बीते दिनों कई में काम वीडियोज वायरल हुए, जिनमें उन पर एक मंत्री ने आरोप लगाया कि वो नशे की हालत में गाना गा रहे थे। अब, सिंगर का इंटरव्यू सामने आया है जिसमें उन्होंने खुद इसका कारण बताया था। पंजाबी गायक तीन दशकों से भी अधिक समय से दर्शकों का मनोरंजन कर रहे हैं। हाल ही में, वे नवरात्रि के मौके पर आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में परफॉर्म करने उत्तराखंड गए थे। राज्य के कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल भी मौजूद थे। उन्होंने मंच

कैबिनेट मंत्री ने मंच पर नशे की हालत में होने पर दलेर मेहंदी को लगाई थी फटकार

पर नशे की हालत में होने के आरोप में दलेर मेहंदी को फटकार लगाई। यह घटना चर्चा का विषय बन गई और जब वीडियो इंटरनेट पर तेजी से वायरल हुआ, तो मंत्री ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि उन्होंने दलेर मेहंदी को इस परफॉर्मेंस के लिए 35 लाख रुपये दिए थे। साथ ही, उन्होंने



पलाश सेन, राजपाल यादव, वीर दास और अनुपम खेर शामिल हैं। मीका सिंह ने अपने भाई का पक्ष लेते हुए कहा कि उन्होंने अपनी जिंदगी में कभी शराब को हाथ तक नहीं लगाया है। उन्होंने चुनौती दी कि अगर दलेर मेहंदी कभी नशे की हालत में पाए जाते हैं, तो वे (मीका) खुद गाना छोड़ देंगे। दलेर मेहंदी ने बताया कि उनके गुरु राहत अली खान ने उन्हें सिखाने के लिए दो शर्तें रखी थीं – पहली यह कि वे कभी शराब को हाथ नहीं लगाएंगे, और दूसरी यह कि वे कभी अपने बाल नहीं कटवाएंगे। मेहंदी ने कहा, मेरे गुरु, उस्ताद राहत अली खान, जिनसे मैंने गायकी सीखी, उन्होंने दो शर्तें रखी थीं: मैं कभी शराब को हाथ नहीं लगाऊंगा और कभी अपने बाल नहीं कटवाऊंगा। मेरी मां भी मुझे यही सलाह देती थीं। उन्होंने आगे कहा, मां बताती थीं कि उन्होंने एक बेटे की मन्नत के लिए गुरु गोबिंद सिंह जी के गुरुद्वारे में सुबह तीन बार प्रार्थना की थी। बचपन में, जब मैं धर्मेन्द्र और शाहरुख खान को देखता था, तो सोचता था कि अगर मैं भी अपने बालों की मांग एक तरफ या दूसरी तरफ निकालूं, तो कैसा लूंगा।

# प्रियंका गांधी के बेटे की प्रदर्शनी से तस्वीरें हटाने पर मचा घमासान

» कांग्रेस ने भाजपा पर साधा निशाना, राजस्थान के पूर्व सीएम भड़के

» प्रशासन ने दिया बुकिंग पॉलिसी का हवाला

4पीएम न्यूज नेटवर्क

जयपुर। प्रियंका गांधी के बेटे की प्रदर्शनी से तस्वीरें हटाने को लेकर घमासान मच गया। कांग्रेस ने भाजपा पर निशाना साधा है। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने दिल्ली स्थित बीकानेर हाउस में फोटोग्राफर रेहान वाद्रा की प्रदर्शनी से 70 से अधिक तस्वीरें हटाए जाने पर कड़ा ऐतराज जताया है। उन्होंने इसे कलाकारों की आवाज दबाने और लोकतंत्र पर हमला करार देते हुए भाजपा सरकार से स्पष्टीकरण मांगा। गहलोत ने तिरंगे की तस्वीरें हटाने से इनकार करने पर रेहान के कदम की सराहना भी की। निंदा करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि कलाकारों की आवाज दबाना लोकतंत्र पर सीधा हमला है।

उन्होंने इसके लिए भाजपा की सरकार पर निशाना साधते हुए उससे जवाब देने को कहा

आंदोलनों के समय अनुचित कदमों को छिपाना चाहती है बीजेपी : गहलोत

अगर सरकार एक फोटो प्रदर्शनी से घबरा जाती है तो इसका मतलब है कि वह इन आंदोलनों के दौरान उठाए गए अनुचित कदमों को छिपाना चाहती है। गहलोत ने इसका निराकरण करते हुए कहा कि वाद्रा से तिरंगे की दो तस्वीरें हटाने के लिए कहा गया लेकिन उन्होंने तिरंगे वाली तस्वीरें हटाने से साफ इनकार कर दिया। कांग्रेस नेता ने इसकी सराहना करते हुए कहा, “उनकी यह दृढ़ता सराहनीय है। उन्होंने दिखा दिया कि तिरंगे के सम्मान पर कोई समझौता नहीं हो सकता।” गहलोत ने कहा, “कलाकारों की आवाज दबाना लोकतंत्र पर सीधा हमला है।

कि ये तस्वीरें क्यों हटाई गईं। गहलोत ने एक बयान में कहा कि दिल्ली के बीकानेर हाउस में रेहान वाद्रा की फोटो प्रदर्शनी से 70 से अधिक तस्वीरें हटवा दी गईं। उन्होंने कहा, बीकानेर हाउस राजस्थान सरकार की संपत्ति है। यानी भाजपा सरकार की निगरानी में एक युवा कलाकार की कला का गला घोंटा गया, जो बेहद निंदनीय है। गहलोत के अनुसार इस प्रदर्शनी में कई तस्वीरें दिल्ली के युवा आंदोलनों की थीं।

उन्होंने कहा, ‘भाजपा को सबसे ज्यादा डर उसी सच से लगता है जो जनता के सामने आ जाए।’ उल्लेखनीय है कि कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा के बेटे और फोटोग्राफर रेहान वाद्रा ने बुधवार को कहा कि बीकानेर हाउस प्रशासन ने उनकी एकल प्रदर्शनी शुरू होने से कुछ घंटे पहले दिल्ली में हाल में हुए विरोध-प्रदर्शनों से जुड़ी उनकी कई तस्वीरें हटा दीं। प्रदर्शनी ‘नो आइडिया इज फाइनल’ का पूर्ववलोकन बुधवार को हुआ। यह प्रदर्शनी बृहस्पतिवार से आम लोगों के लिए खुलेगी।

प्रियंका बोलीं- अब यह लोकतंत्र नहीं रहा

इस विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए, कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाद्रा ने अपने बेटे की तस्वीरों का बचाव किया। उन्होंने कहा कि इनमें कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है, ये बस कुछ घटनाओं को दर्शाती हैं। यह घेतावनी देते हुए कि अन्य कलाकारों को भी ऐसी ही पाबंदियों का सामना करना पड़ सकता है, उन्होंने कहा, अब यह लोकतंत्र नहीं रहा। आज उनके साथ ऐसा हुआ है, कल किसी और कलाकार के साथ होगा। एक्स पर एक पोस्ट में, प्रियंका ने रेहान के प्रति अपना समर्थन जताते हुए कहा, जब सत्ता में बैठ कोई व्यक्ति किसी दूसरे की अभिव्यक्ति से डरने लगता है, तो उसे शायद इस बात का एहसास नहीं होता, लेकिन वह असल में उसी ताकत को खो चुका होता है जिसे वह बचाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने आगे कहा, तुम सच के साथ खड़े रहने, और हर खूबसूरत चीज खुद-ब-खुद तुम्हारे पास आ जाएगी। मुझे तुम पर गर्व है, और हमेशा रहेगा। उनके पति सचिव वाद्रा ने भी आलोचना की।



अगले 30 साल आपका नंबर नहीं लगने वाला : शाह  
» भाजपा नेता का राहुल गांधी को मेसेज

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। ऐसे समय में जब राहुल गांधी विदेश यात्रा पर गए हुए हैं और कांग्रेस तथा उसके सहयोगी दल मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञान कुमार के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं, गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्ष के नेता पर एक और निशाना साधा। उन्होंने भविष्यवाणी की कि कांग्रेस पार्टी अगले तीन दशकों तक सत्ता से बाहर रहेगी। यमुना की सफाई के लिए 8,941 करोड़ रुपये की परियोजनाओं की शुरुआत करने के बाद, शाह ने गांधी की विदेश यात्रा पर तंज कसा। बताया जा रहा है कि कांग्रेस सांसद चार दिन की यात्रा पर वियतनाम गए हैं। शाह ने कहा कि मुझे पता है कि आप मुझे सुन नहीं सकते, आप विदेश में कहीं बैठे हैं।



आप यह भी नहीं बताते कि क्यों, लेकिन कोई बात नहीं, यह आपकी निजी जिंदगी है... लेकिन जब आप दिल्ली लौटें, तो मेरी बात सुन लें; अगले तीस सालों तक आपकी बारी नहीं आएगी। गांधी का वियतनाम जाना ऐसे समय में हुआ है जब इंडिया गठबंधन और कॉकरोच जनता पार्टी देश भर में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। ये प्रदर्शन एसआईआर प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं और उनमें ज्ञानेश कुमार की कथित भूमिका को लेकर हो रहे हैं। हमेशा की तरह, बीजेपी ने उनके इस विदेश दौरे को लेकर उन पर तुरंत तंज कसा।

## श्रद्धा के बाद अब इंस्पेक्टर विक्रम की चर्चा

» सोशल मीडिया पर वापसी की उठ रही आवाज  
» शिवा शर्मा मौत मामले में फरार आरोपियों को नागपुर से लखनऊ लाई पुलिस

4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। शिवा शर्मा मौत मामले में फरार चल रही आरोपी श्रद्धा दुबे, उसकी बहन रश्मि दुबे और झाड़वर दानिश को पुलिस नागपुर से लखनऊ ले आई है। आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद अब इस पूरे प्रकरण के बीच एक और नाम सबसे ज्यादा चर्चा में है। वह नाम है हजरतगंज के पूर्व थाना प्रभारी इंस्पेक्टर विक्रम सिंह का। श्रद्धा दुबे की तलाश में पुलिस की कई टीमें लगाई गई थीं। इसी बीच इंस्पेक्टर से लेकर एसपी और डीसीपी तक पर कार्रवाई करते हुए उन्हें पदों से हटा दिया गया। लेकिन इन सबके बीच जिस पुलिस अधिकारी के समर्थन में जनता खुलकर सामने आई, वह



इंस्पेक्टर विक्रम सिंह हैं।

विक्रम सिंह को हटाए जाने के बाद सोशल मीडिया पर उनके समर्थन में लगातार पोस्ट सामने आईं। आम नागरिकों से लेकर राजनीतिक क्षेत्र से जुड़े लोगों, छात्रों और मीडिया जगत के लोगों तक ने उनके कार्यकाल को याद करते हुए उनकी वापसी की मांग उठाई। किसी ने उनके सरल स्वभाव की चर्चा की तो किसी ने जरूरतमंदों के

वर्दी से मिली पहचान, लेकिन व्यवहार से कमाया प्यार

पुलिस की नौकरी में अधिकारी आते हैं, जाते हैं। थानों की जिम्मेदारियां बदलती रहती हैं, लेकिन कुछ अधिकारी अपने पीछे ऐसी छाप छोड़ जाते हैं, जिसे लोग लंबे समय तक याद रखते हैं। विक्रम सिंह के समर्थन में उठ रही आवाजें इसी बात का उदाहरण बनकर सामने आई हैं। जरूरतमंदों की मदद हो, बेसहस लोगों के बीच व्यवहार की सुविधा बंटना हो या आम नागरिकों के साथ सरल व्यवहार, उनके समर्थक आज इनकी कार्यों को याद कर रहे हैं। शायद यही वजह है कि श्रद्धा दुबे की गिरफ्तारी के बाद भी सोशल मीडिया पर विक्रम सिंह को लेकर चर्चा थमती नजर नहीं आ रही है।

लिए किए गए उनके कार्यों को याद किया। किसी ने उन्हें जनता का इंस्पेक्टर बताया तो किसी ने उनकी बहाली के लिए मुख्यमंत्री से गुहार लगाई। यह समर्थन केवल एक पुलिस अधिकारी के स्थानांतरण या कार्रवाई पर उठी प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि उस रिश्ते की कहानी भी बयां करता है, जो विक्रम सिंह ने हजरतगंज में थाना प्रभारी रहते हुए जनता के साथ बनाया।

## शीतल देवी और तोमन कुमार ने जीता स्वर्ण

» एशियाई पैरा खेल: स्वाति को मिला रजत

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नागोया। नागोया में आयोजित एशियाई पैरा खेलों की तीरंदाजी प्रतियोगिता में शीतल देवी और तोमन कुमार की भारतीय जोड़ी ने कंपाउंड मिश्रित टीम स्पर्धा में इंडोनेशिया को 151-148 से हराकर स्वर्ण पदक जीत लिया। महिला डब्ल्यू1 वर्ग के फाइनल में स्वाति चौधरी को हार के बाद रजत पदक से संतोष करना पड़ा, जिसके साथ वह इस श्रेणी में पदक जीतने वाली देश की पहली तीरंदाज बन गईं। भारत की शीतल देवी और तोमन कुमार ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बृहस्पतिवार को यहां एशियाई पैरा खेलों की तीरंदाजी प्रतियोगिता की कंपाउंड मिश्रित टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता, जबकि स्वाति चौधरी ने महिला डब्ल्यू1 श्रेणी में रजत पदक जीतकर इतिहास रचा।

शीतल और तोमन ने मौजूदा खेलों में तीरंदाजी में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया। इससे पहले शीतल ने महिला कंपाउंड युगल स्पर्धा में पायल नाग के साथ मिलकर रजत पदक जीता था। शीतल का यह एशियाई पैरा खेलों में मिश्रित टीम वर्ग में लगातार दूसरा स्वर्ण पदक है। इससे पहले उन्होंने 2023 के हांगझोउ खेलों में राकेश कुमार के साथ मिलकर खिताब जीता था। शीतल और तोमन ने फाइनल में इंडोनेशिया की तेओडोरा



ऑडी आयुडिया फेरली और केन स्वागुमिलंग को 151-148 से हराया। कालीफाईंग राउंड में विश्व रिकार्ड बनाने वाली शीर्ष वरीयता प्राप्त भारतीय जोड़ी ने फाइनल में शुरू से लेकर आखिर तक अपनी बढ़त बनाए रखी। भारतीय टीम ने पहले सेट में 38-37 से बढ़त हासिल कर ली। इसके बाद उन्होंने दूसरे सेट में भी अच्छा प्रदर्शन किया और 77-73 के अंतर से अपनी बढ़त चार अंक की कर दी इस दौरान उन्होंने केवल एक अंक गंवाया। इंडोनेशियाई टीम ने तीसरे सेट में एक अंक से जीत हासिल की, लेकिन भारतीय टीम ने तीन

## लोकतंत्र में कानून के उल्लंघन पर सवाल उठाना गलत नहीं

» अन्नामलाई ने भ्रष्टाचार विरोधी प्रदर्शनकारियों पर आधी रात को की गई पुलिस कार्रवाई की कड़ी निंदा की

4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। भाजपा की तमिलनाडु इकाई के पूर्व अध्यक्ष के अन्नामलाई ने नयी दिल्ली में काँजपा के प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिए जाने को लेकर केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला। अन्नामलाई ने अपने आलोचकों को स्पष्ट रूप से याद दिलाया कि उन्होंने इस साल जून में ही भाजपा से इस्तीफा दे दिया था। अपनी प्रेस वार्ता की आलोचना के बाद अन्नामलाई ने ‘एक्स’ पर एक पोस्ट में नरेन्द्र मोदी के 2011 के उस बयान का जिक्र किया, जो उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में दिया था। मोदी ने तब रामलीला मैदान में भ्रष्टाचार विरोधी प्रदर्शनकारियों पर आधी रात को की गई पुलिस कार्रवाई की कड़ी निंदा की थी।



अन्नामलाई ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, “2011 में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि अगर उनके हाथ बंधे न होते, तो वह दिल्ली जाकर केंद्र सरकार के खिलाफ जंग छेड़ देते।” अन्नामलाई ने कहा, “मेरी राय में माननीय प्रधानमंत्री ने उस समय जो कहा था, वह बिल्कुल सही था और इसमें कुछ भी गलत नहीं है।” उन्होंने कहा, आज आपको अनिश्चितकाल के लिए जेल भेजा जा सकता है, आपके जमानतदारों के बॉण्ड खारिज किए जा सकते हैं और हैरानी की बात यह है कि निवारक बॉण्ड से जुड़े मामलों से निपटने का अधिकार मिलने पर एक विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट आपको अपने इशारों पर नचा सकता है।” अन्नामलाई ने कहा, अगर आप लोकतंत्र में कानून की उचित प्रक्रिया के उल्लंघन पर सवाल उठाते हैं, तो आपको भला-बुरा कहा जाएगा और आप पर हमलों की झड़ी लग जाएगी, जिसमें आपको विदेशी एजेंट करार देना भी शामिल होगा।” उन्होंने कहा, “जब से मैंने नीट प्रश्नपत्र लीक को लेकर हुए विरोध-प्रदर्शनों के दौरान केंद्र सरकार से प्रदर्शनकारियों से बात करने के लिए कहा है, तब से मुझ पर लगातार हमले हो रहे हैं।

## सेमीफाइनल में टी चीनी ताइपे की जोड़ी को मात

शीतल और तोमन ने सेमीफाइनल में चीनी ताइपे की जोड़ी ली युन-हियन और यांग जून-काई को संघर्षपूर्ण मुकाबले में 142-141 से हराया था। शीतल और तोमन ने कालीफाइनल राउंड में 1402 अंक बनाकर नया विश्व रिकार्ड बनाया था। शीतल जन्म से ही गुजराती हैं। वह धनुष को सही स्थिति में रखने के लिए अपने पैरों का इस्तेमाल करती हैं और डोरी को खींचने और छोड़ने के लिए अपने कंधे और जबड़े का उपयोग करती हैं। छत्तीसगढ़ के बलोट जिले के नवागांव के रहने वाले 31 वर्षीय तोमन सीआरपीएफ में कार्यरत हैं। उन्होंने फरवरी 2022 में झारखंड के लोहरदगा जिले में माओवादियों के खिलाफ संयुक्त तलाशी अभियान के दौरान एक आईईडी विस्फोट में अपना बायां पैर गंवा दिया था।

अंकों की बढ़त बनाए रखी। अंतिम सेट में दोनों टीमों ने 38 अंक बनाए, जो भारत को तीन अंकों की जीत के साथ स्वर्ण पदक दिलाने के लिए पर्याप्त थे।

# योगी सरकार की छवि पर दाग लगावा रहे अधिकारी

» इतने हादसों के बाद भी कानपुर में अवैध निर्माणों की भरमार

» कहां सो गया प्रवर्तन दस्ता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क / प्रांजुल मिश्रा

कानपुर। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस और शहरों के सुनियोजित विकास का दावा करती है लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही बयां करती है। दिल्ली से लेकर लखनऊ-कानपुर में हुए हादसों में कितने लोगों की जाने जा चुकी हैं चार दिन नियम कानून याद आते हैं उसके बाद फिर से अधिकारी भड़ चाल चलने लग जाते हैं। कानपुर की सड़कों, बाजारों और घनी आबादी वाले इलाकों में भवन निर्माण के नियमों के पालन को लेकर उठ रहे सवाल इस दावे की जमीनी हकीकत परखने की मांग कर रहे हैं।

शहर में जगह-जगह बहुमंजिला इमारतों के निर्माण, पार्किंग की जगह पर व्यावसायिक गतिविधियों और स्वीकृत मानचित्र से इतर निर्माण की शिकायतें सामने आतीं रहतीं हैं। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल कानपुर विकास प्राधिकरण यानी केडीए के प्रवर्तन तंत्र की सक्रियता और जवाबदेही को लेकर है। चमनगंज, बेकनगंज, प्रेम नगर, बांस मंडी, स्वरूप नगर, आर्य नगर, जाजमऊ, कृष्णा नगर, बिरहाना रोड, पटकापुर और 80 फीट रोड समेत शहर के विभिन्न हिस्सों में निर्माण संबंधी शिकायतों की निष्पक्ष जांच की जरूरत है। कहीं पुराने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की जगह नई इमारतें खड़ी होने पर

## सरकार की छवि पर डेंट लगा रहे अधिकारी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार की भ्रष्टाचार के खिलाफ नीति का मूल्यांकन केवल घोषणाओं से नहीं, बल्कि विभागीय कार्रवाई की पारदर्शिता से भी होता है। जब किसी विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठते हैं और शिकायतों का समाधान दिखाई नहीं देता, तो जनता के बीच पूरे प्रशासन को लेकर संदेह पैदा हो सकता है। इसलिए केडीए के लिए जरूरी है कि वह जेनवार निर्माणों का रिकॉर्ड सार्वजनिक करे, शिकायतों पर समयबद्ध जांच कराए और प्रमाणित उल्लंघनों पर कार्रवाई की जानकारी दे। केवल प्रवर्तन जोन 1 में 250-300 से ज्यादा अवैध निर्माण हैं अनियमितताएं प्रमाणित होती हैं, फिर भी जिम्मेदारों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होती। मुख्यमंत्री की जीरो टॉलरेंस नीति की असली परीक्षा यही है कि नियम तोड़ने वाले चाहे कितने भी प्रभावशाली क्यों न हों, उन पर कार्रवाई हो और निगरानी में लापरवाही करने वाले अधिकारियों की जिम्मेदारी भी तय की जाए। कानपुर की जनता को केवल नोटिसों और आश्वासनों की नहीं, सुरक्षित भवनों, खुली पार्किंग, बाजारहित फुटपाथ और जाम से राहत की जरूरत है। अब निगमों के उच्चाधिकारियों पर है कि वे जोन-1 समेत शहर के संवेदनशील क्षेत्रों में निष्पक्ष जांच कराकर निर्माण संबंधी शिकायतों की सच्चाई सामने लाते हैं या नहीं। सबसे बड़ा सवाल अब भी कायम है-जब शहर में निर्माण तेजी से हो रहे हैं, तो प्रवर्तन तंत्र की निगरानी कितनी प्रभावी है और यदि कहीं नियमों का उल्लंघन हो रहा है, तो उसकी जवाबदेही आखिर किसकी होगी?

## कागजों में तो पार्किंग गाड़ियां सड़क पर, जाम की कीमत जनता चुकाए?

कानपुर पहले ही यातायात के दबाव से जूझ रहा है। व्यस्त बाजारों और घनी आबादी वाले इलाकों में सड़क की चौड़ाई सीमित है। ऐसे में यदि किसी व्यावसायिक भवन की निर्धारित पार्किंग का इस्तेमाल दुकान, कार्यालय या प्लेट के लिए किया जाता है, तो वहां आने वाले लोगों के वाहन सड़क या फुटपाथ पर खड़े होने की आशंका बढ़ जाती है। इसका सीधा असर आम नागरिकों पर पड़ता है। पैदल चलने वालों को फुटपाथ छोड़कर सड़क पर उतरना पड़ सकता है, दोपहिया और चारपहिया वाहनों की आवाजाही बाधित होती है और आपातकालीन सेवाओं के लिए रास्ता मुश्किल हो सकता है। ऐसे में सवाल उठता है कि भवन निर्माण की अनुमति देते समय पार्किंग की जरूरतों का आकलन कैसे किया जा रहा है? क्या निर्माण पूरा होने के बाद यह सत्यापित किया जाता है कि पार्किंग निर्धारित स्थान पर ही उपलब्ध है? यदि स्वीकृत पार्किंग का व्यावसायिक इस्तेमाल हो रहा है, तो उसकी निगरानी और कार्रवाई की जिम्मेदारी किसकी है? नवरो में पार्किंग दिखाकर जमीन पर उसका दूसरा इस्तेमाल होने की शिकायतों की जांच जरूरी है।

सवाल हैं, तो कहीं संकरी सड़कों और सीमित पार्किंग वाले क्षेत्रों में बहुमंजिला निर्माण की स्थिति की पड़ताल जरूरी है।

सवाल यह नहीं कि शहर में इमारतें क्यों बन रही हैं, बल्कि यह है कि क्या हर निर्माण स्वीकृत नक्शे, निर्धारित ऊंचाई, भू-उपयोग,



कानपुर में एक नए भवन के निर्माण का दृश्य।

पार्किंग और अग्नि सुरक्षा के मानकों के अनुरूप हो रहा है? शहर में भवन निर्माण के नियमों के अनुपालन की जांच केवल बाहर से इमारत देखकर पूरी नहीं हो सकती। कई मामलों में असली स्थिति स्वीकृत मानचित्र और मौके पर मौजूद निर्माण की तुलना से ही स्पष्ट होती है। जांच में इन बिंदुओं को

## दिल्ली से लखनऊ-कानपुर तक हादसों की चेतावनी, सुरक्षा पर सवाल?

देश के अलग-अलग शहरों में हुए हादसे यह याद दिलाते हैं कि भवन निर्माण, अग्नि सुरक्षा और आपातकालीन निकास के नियम केवल कागजी औपचारिकताएं नहीं हैं। उनकी अनदेखी लोगों की जान पर भारी पड़ सकती है। दिल्ली के सत्य निकेतन में अप्रैल 2022 में निर्माणधीन इमारत ढहने से मजदूरों की मौत हुई थी। लखनऊ के हजरतगंज स्थित लेवाना स्टूड्स होटल में 5 सितंबर 2022 को आग लगने से चार लोगों की मौत हुई। दिल्ली के ओल्ड राजेंद्र नगर में 27 जुलाई 2024 को रात आईएस स्टडी सेंटर के बेसमेंट में पानी भरने से तीन सिविल सेवा अकादमियों की जान चली गई। इन घटनाओं ने भवन सुरक्षा, जल निकासी, स्वीकृत उपयोग और संबंधित विभागों की जवाबदेही पर गंभीर सवाल खड़े किए। कानपुर भी ऐसी त्रासदियों से अछूता नहीं रहा है। मई 2022 में



हमराज कॉन्प्लेक्स में गीषण आग लगी थी अरबों रुपये का नुकसान हुआ था। वही, मई 2025 में चमनगंज के प्रेम नगर क्षेत्र की एक बहुमंजिला आवासीय-सह-व्यावसायिक इमारत में आग लगने से एक दंपति और उनकी तीन बेटियों समेत पांच लोगों की मौत हो गई थी। उस इमारत में जुता निर्माण से जुड़ी गतिविधियां भी संचालित हो रही थी। आग लगने के कारणों और सुरक्षा संबंधी पहलुओं की जांच की जरूरत ने

एक बार फिर घनी आबादी वाले इलाकों में भवनों के इस्तेमाल और आपातकालीन पहर के सवाल को सामने ला दिया। इन घटनाओं को कानपुर के हर निर्माण में अनिवारिता का प्रमाण नहीं माना जा सकता, लेकिन वे यह जरूर बताती हैं कि सुरक्षा मानकों की अनदेखी की आशंका को हल्के में नहीं लिया जा सकता। कानपुर में भी यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि आवासीय और व्यावसायिक उपयोग के नियमों, अग्नि सुरक्षा, निकास मार्ग और भवन की संरचनात्मक सुरक्षा से समझौता न हो। शहर में अवैध निर्माणों की शिकायतें लगातार सामने आती हैं, तो केवल भवन स्वामियों को नोटिस देकर मामला समाप्त नहीं किया जा सकता। विभाग को यह बताना होगा कि किन क्षेत्रों में कितने निर्माणों का निरीक्षण हुआ, कितने मामलों में उल्लंघन पाया गया और कितने मामलों में प्रभावी कार्रवाई की गई...।

## सीएम की सख्ती के बाद भी अधिकारी काट रहे मौज

सरकार की नीतियों का वास्तविक असर तभी दिखाई देता है, जब सरकारी विभागों की कार्यप्रणाली पारदर्शी हो और नियम तोड़ने वालों के खिलाफ समान रूप से कार्रवाई हो। यदि किसी क्षेत्र में निर्माण कार्य शुरू होने के बाद भी लंबे समय तक मानकों के उल्लंघन की शिकायतें बनी रहती हैं, तो संबंधित प्रवर्तन अधिकारियों की निगरानी व्यवस्था पर सवाल उठना स्वाभाविक है। केडीए के जोन-1 के प्रवर्तन प्रभारी अतुल राय की कार्यप्रणाली को लेकर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। आरोप हैं कि क्षेत्र में कुछ निर्माणों में अतिरिक्त स्लैब डालकर इमारतों का विस्तार किया जा रहा है और बेसमेंट का इस्तेमाल निर्धारित उद्देश्य से अलग व्यावसायिक गतिविधियों के लिए किया जा रहा है। इन आरोपों की पुष्टि के लिए स्वीकृत मानचित्रों, संशोधित अनुमतियों, स्थल निरीक्षण रिपोर्ट, सीलिंग और



व्यस्तिकरण संबंधी अभिलेखों का परीक्षण जरूरी है। यदि किसी निर्माण में स्वीकृत नवरो से अधिक स्लैब डाले गए हैं, पार्किंग क्षेत्र को दुकानों या कार्यालयों में बदला गया है अथवा बेसमेंट का उपयोग नियमों के विरुद्ध हो रहा है, तो यह केवल भवन स्वामी का मामला नहीं रह जाता। ऐसे मामलों में यह भी जांचना होगा कि निर्माण के दौरान निरीक्षण किसने किया, उल्लंघन की जानकारी विभाग तक कब पहुंची और समय रहते कार्रवाई क्यों नहीं हुई।

प्राथमिकता दी जानी चाहिए— स्वीकृत नक्शे के मुकाबले वास्तविक मंजिलों और अतिरिक्त स्लैब की संख्या कितनी है?

बेसमेंट का स्वीकृत उपयोग क्या है और वहां वास्तव में दुकान, कार्यालय, गोदाम या अन्य व्यावसायिक गतिविधि तो नहीं चल रही?

# अब इंस्टाग्राम पर भी अपनी बात रखेंगी सोनिया गांधी

» बिलॉन्गिंग अ जर्नी ऑफ लव की पहली झलक साझा की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने इंस्टाग्राम पर पदार्पण करते हुए अपने आगामी संस्मरण बिलॉन्गिंग अ जर्नी ऑफ लव की पहली झलक साझा की। 544 पन्नों की यह आत्मकथा अल्फ्रेड ए. नॉफ और हार्परकॉल्लिन्स इंडिया द्वारा 10 नवंबर 2026 को प्रकाशित की जाएगी। इसमें उनके व्यक्तिगत जीवन, राजीव गांधी से मुलाकात और जीवन की त्रासदियों का उल्लेख है। सोशल मीडिया पर पहली बार कदम रखते हुए, कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने गुरुवार को इंस्टाग्राम पर अपनी शुरुआत की।

उन्होंने इस प्लेटफॉर्म पर अपनी आने वाली संस्मरण पुस्तक, बिलॉन्गिंग अ जर्नी ऑफ लव की एक झलक के साथ खुद को पेश किया। सोनिया गांधी ने अपनी पहली पोस्ट में लिखा, नमस्ते सभी को, आप सबके साथ इस पल को साझा करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है, पेश है मेरी किताब बिलॉन्गिंग अ जर्नी ऑफ लव की पहली झलक। उन्होंने आगे लिखा कि यह प्यार, कर्तव्य, नुकसान

## अपनों को खोने के दुख ने ही मुझे राजनीति में धकेला

गांधी ने पहले भी अपने परिवार के बारे में लिखा है, लेकिन यह नया संस्मरण उनके जीवन और अनुभवों के एक अधिक व्यक्तिगत विवरण के रूप में पेश किया जा रहा है। नॉफ द्वारा जारी एक बयान में उन्होंने कहा कि उनके परिवार के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, लेकिन बहुत कम ही ऐसे वृत्तों में जिनमें परिवार के सदस्यों की प्रेरणाओं, कार्यों और मानवीय कर्मियों को सही ढंग से दर्शाया गया हो। उन्होंने कहा कि दिल टूटने और अपनों को खोने के दुख ने ही मुझे राजनीति की सार्वजनिक दुनिया में धकेल दिया। उससे पहले तक, मैंने अपनी निजता (प्राइवैसी) को बहुत सख्ती से बचाकर रखा था।

और अपना स्थान खोजने की कहानी है। मुझे आप सभी के साथ इसे साझा करने का बेसब्री से इंतजार है। यह पोस्ट उस किताब की पहली झलक दिखाती है, जिसे 10 नवंबर, 2026 को रिलीज़ किया जाना है। 544 पन्नों की इस आत्मकथा को अल्फ्रेड ए. नॉफ द्वारा वैश्विक स्तर पर प्रकाशित किया जा रहा है, जबकि भारत में इसे हार्परकॉल्लिन्स इंडिया द्वारा रिलीज़ किया जाएगा। बिलॉन्गिंग अ जर्नी ऑफ लव की शुरुआत 1965 में इंग्लैंड के कैम्ब्रिज से होती है, जब 19 साल की छात्रा सोनिया माइनो की मुलाकात राजीव गांधी से हुई।

# सीजेपी नेताओं ने मांगा और वक्त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सीजेपी नेता सौरव दास और आशुतोष रांका आज दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच के सामने पूछताछ के लिए पेश नहीं होंगे, उन्होंने अधिक समय मांगा है। दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच के सूत्रों के अनुसार, पुलिस उन्हें एक नया नोटिस जारी करने की उम्मीद है। जानकारी के लिए बात दें कि सीजेपी के दो प्रमुख नेता सौरव दास और आशुतोष रांका आज दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच के समक्ष पूछताछ के लिए उपस्थित होने थे। लेकिन उन्होंने दिल्ली पुलिस से इस मामले में पेश होने के लिए अधिक समय देने का अनुरोध किया है। बता दें कि दिल्ली

## सौरव दास और आशुतोष रांका आज नहीं होंगे पेश क्राइम ब्रांच भेज सकती है नया समन

पुलिस की क्राइम ब्रांच ने सीजेपी नेताओं सौरव दास, आशुतोष रांका और अजिंक्य शिंदे को जांच में शामिल होने के लिए आज तलब किया था। दिल्ली पुलिस के सूत्रों के मुताबिक, तिहाड़ जेल से रिहा होने के बाद सौरव दास और आशुतोष रांका को क्राइम ब्रांच ने नोटिस जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया।

# सुप्रीम कोर्ट की केंद्र सरकार को करारी फटकार

» शीर्ष अदालत बोली- अदालतें दखल दे सकती हैं, हमारे हाथ बंधे नहीं हैं

» स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों को लेकर दी नसीहत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश में एसआईआर और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ लगातार हो रहे विरोध प्रदर्शन के बीच अब सुप्रीम कोर्ट ने इशारों-इशारों में सरकार को नसीहत दे डाली है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि संवैधानिक अदालतों के पास चुनावों में दखल देने की शक्ति है। अगर असंवैधानिक या गैर-कानूनी तरीकों की वजह से चुनावों की निष्पक्षता पर खतरा आता है, तो अदालतें हस्तक्षेप



कर सकती हैं। हालांकि, आम तौर पर चुनावी प्रक्रिया में न्यायिक दखल सीमित ही रहता है।

दरअसल, जस्टिस जॉयमाल्य बागची और जस्टिस वी. मोहन ना को बेंच ने आंध्र प्रदेश की मुख्य विपक्षी पार्टी, युवाजन श्रमिक रायतू कांग्रेस पार्टी को अंतरिम राहत देते हुए यह टिप्पणी की। पार्टी ने आरोप लगाया कि हिंसा और बाधाओं के कारण, उनके लगभग दो-तिहाई उम्मीदवार शहरी

## केरलम में अवैध पटाखा निर्माण के दौरान धमाका, मां-बेटे झुलसे और मकान ढहा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पलक्कड। केरलम में पलक्कड के ओट्टापलम में अवैध रूप से पटाखे बनाने वाली इकाई में विस्फोट होने से 60 वर्षीय महिला समेत दो लोग घायल हो गए और उनका घर पूरी तरह नष्ट हो गया। यह इकाई उनके घर में ही संचालित हो रही थी।

घायलों की पहचान जानकी और उनके बेटे शाजेश (35) के रूप में हुई है। दोनों ओट्टापलम के मणिक्कपारा के निवासी हैं। पुलिस के अनुसार, दोनों अपनी आजीविका चलाने के लिए पटाखे बनाने और बेचने का काम करते थे।

## संवैधानिक ढांचे के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव बहुत जरूरी

पीठ ने इस बात पर जोर दिया कि संवैधानिक ढांचे के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव बहुत जरूरी हैं, और उम्मीदवारों का नामांकन दाखिल कर पाना इस प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। अदालत ने कहा कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव संविधान का एक बुनियादी ढांचा है। नामांकन दाखिल करके ऐसे चुनावों में हिस्सा लेने का अधिकार, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया का ही एक पहलू है। अदालत ने माना कि संविधान के तहत स्थानीय निकायों के चुनाव कराने और उनकी निगरानी करने की जिम्मेदारी स्वराट (राज्य चुनाव आयोग) की है।

स्थानीय निकाय चुनावों के लिए अपना नामांकन दाखिल नहीं कर सके। न्यायिक संयम का आधार यह है कि चुनाव प्राधिकरणों की स्वतंत्रता बनी रहे और चुनाव तय समय-सीमा के भीतर पूरे हों।